kissekahani.com

एक सी बी टी प्रकाशन

भारत की लोक कथा निधि

भाग २

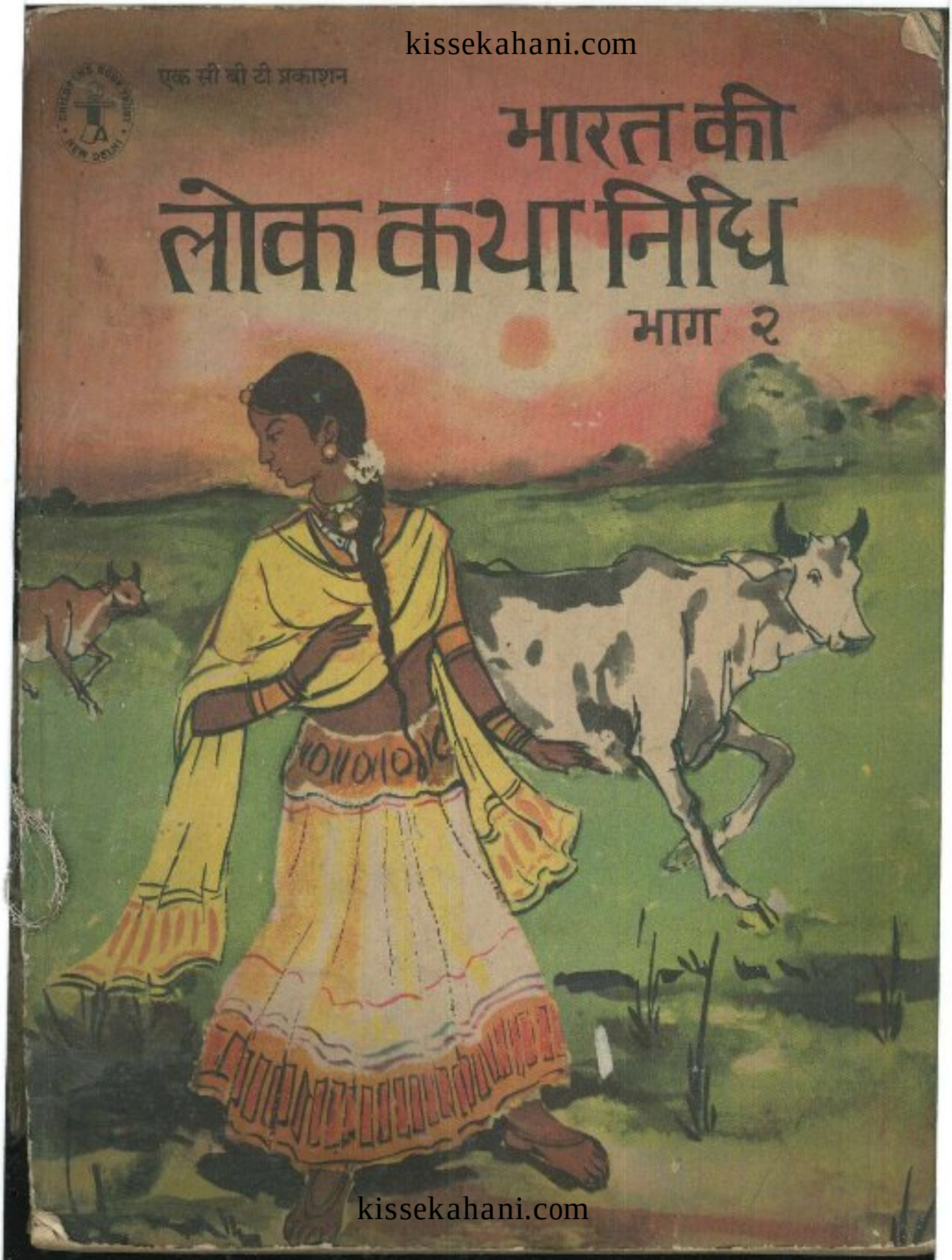

kissekahani.com

प्रथम संस्करण 1971
पुनर्मुद्रण 1973, 1979, 1981, 1985, 1986, 1988, 1989, 1990

BHARAT KI LOK KATHA NIDHI II

© चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट 1971
ISBN 81-7011-098-X

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरु हाउस, 4 बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित और ट्रस्ट के मुद्रणालय इन्द्रप्रस्थ प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

भारत की लोक कथा निधि

भाग २

लेखक : शंकर

चित्रकार : अनिल व्यास

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

प्रस्तावना

हमारी मातृभूमि, जिसे हम भारत माता भी कहते हैं, एक दादी की तरह हैं। बहुत बूढ़ी और उतनी ही समझदार। उन्हें सैकड़ों कहानियां आती हैं। हमारी दादी कहती हैं कि बड़ी-बड़ी पोथियां सबके काम की नहीं होतीं। लेकिन उन पोथियों में जो अक्लमन्दी की बातें हैं वे कहानियों की मदद से जल्दी समझ में आ जाती हैं।

ऐसी कहानियों को लोककथा कहते हैं। ये कथाएं इतनी पुरानी हैं कि कोई भी नहीं बता सकता कि उन्हें पहले-पहल किसने कहा होगा। लोककथाएं एक कान से दूसरे कान में, एक देश से दूसरे देश में जाती रहती हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने पर इन कथाओं का रूपरंग भी बदलता जाता है। एक ही कहानी अलग-अलग जगहों में अलग-अलग ढंग से कही-सुनी जाती है। इस तरह लोककथाएं हमेशा नयी बनी रहती हैं।

भारत में दुनिया के किसी भी देश से ज्यादा लोककथाएं हैं। इनमें से बहुत-सी कथाएं एक मोटी पोथी में जमा की गयी हैं। उस पोथी का नाम है, कथा-सरित्सागर। यानी 'कथाओं की नदियों से बना हुआ सागर'!

अच्छी कथाएं मूल्यवान वस्तुओं की तरह होती हैं और मूल्यवान वस्तुओं को सुरक्षित जगह पर ही रक्खा जाता है। ऐसी सुरक्षित जगह 'निधि' कहलाती है। इसलिए अच्छी-अच्छी कथाओं की पुस्तक भी एक प्रकार की निधि है।

kissekahani.com

क्रम

4 अजगर

12 अरुण, बरुण, और किरण माला

24 हुंचि बिल्ली

29 सोमदत्त और मरा हुआ चूहा

34 नारानथ का पागल

39 ब्राह्मण और बाघ

49 भाग्य

53 जादू की चारपाई

60 रानी का कर

67 नमक की मिठास

75 राजा और तोता

82 नागराय

kissekahani.com

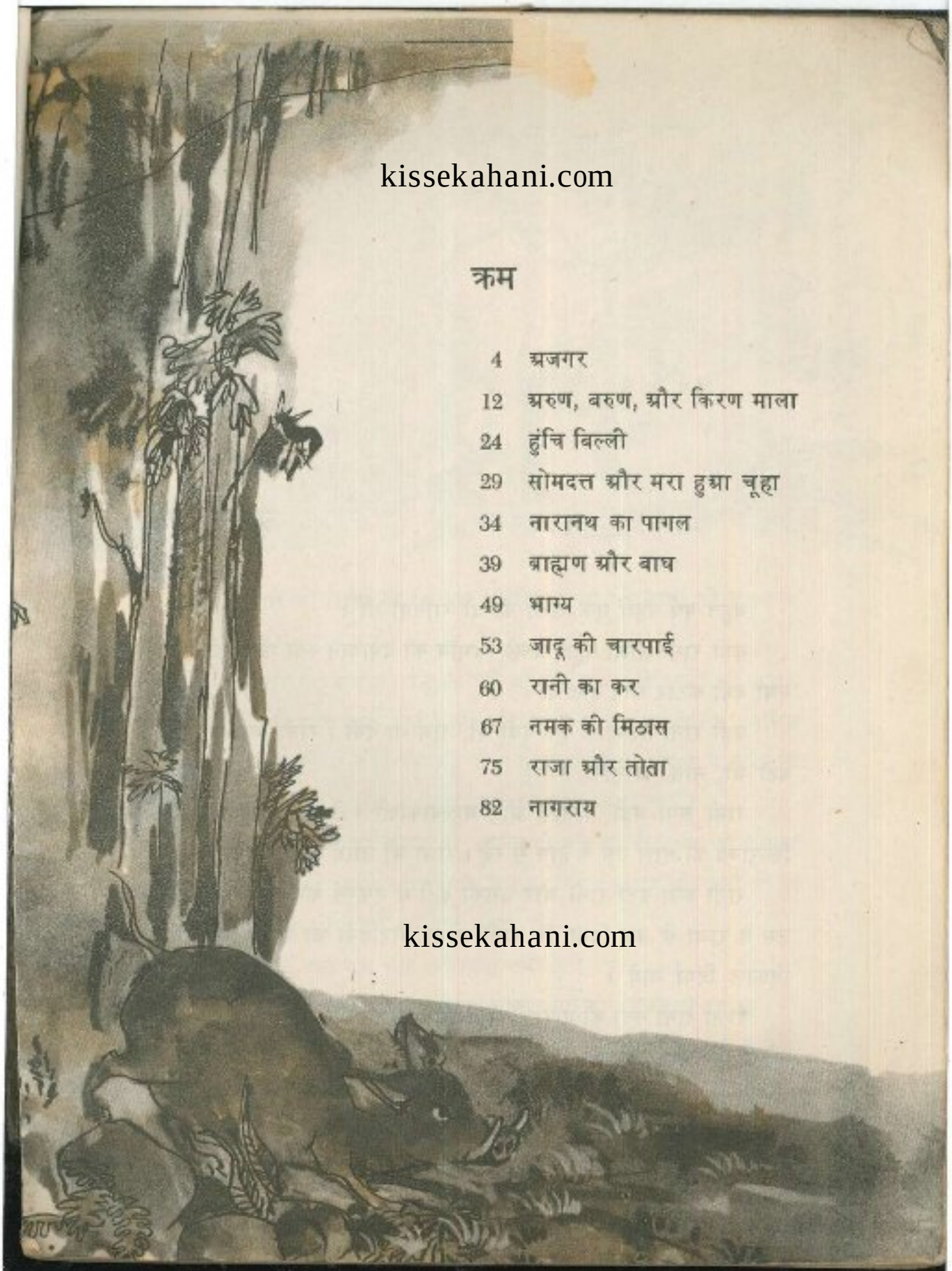

अजगर

बहुत वर्ष पहले एक राजा की दो रानियाँ थीं।

बड़ी रानी शोभा बहुत अच्छे स्वभाव की दयावान स्त्री थी। छोटी रानी रूपा बड़ी कठोर और दुष्ट थी।

बड़ी रानी शोभा के एक पुत्री थी, नाम था देवी। रानी रूपा के भी एक बेटी थी, नाम था तारा।

रानी रूपा बड़ी चालाक और महत्वाकांक्षी स्त्री थी। वह चाहती थी कि राज्य की सत्ता उस के हाथ में रहे। राजा भी उससे दबा हुआ था।

रानी रूपा बड़ी रानी और उसकी बेटी से नफरत करती थी। एक दिन उस ने राजा से कह दिया कि रानी शोभा और देवी को राजमहल से बाहर निकाल दिया जाये।

राजा रानी रूपा की नाराजी से डरता था। उसे लगा कि उसे वही करना पड़ेगा जो रूपा चाहती है। उस ने बड़ी रानी और उस की बेटी को राजमहल के बाहर एक छोटे से घर में रहने के लिए भेज दिया। लेकिन रानी रूपा की घृणा इससे भी नहीं हटी।

उस ने देवी को आज्ञा दी कि वह प्रतिदिन राजा की गायों को जंगल में चराने के लिए ले जाया करे।

रानी शोभा यह अच्छी तरह जानती थी कि यदि देवी गायों को चराने के लिए न गई तो रानी रूपा उन्हें किसी और परेशानी में डाल देगी। इसलिए उस ने अपनी लड़की से कहा कि वह रोज सुबह गायों को जंगल में चरने के लिए ले जाया करे और शाम के समय उन्हें वापिस ले आया करे।

देवी को अपनी माँ का कहना तो मानना ही था, इस लिए वह रोज सुबह गायों को जंगल में ले जाती। एक शाम जब वह जंगल से घर लौट रही थी तो उसे अपने पीछे एक धीमी सी आवाज़ सुनाई दी--

"देवी, देवी, क्या तुम मुझ से विवाह करोगी?"

देवी डर गई। जितनी जल्दी हो सका उसने गायों को घर की ओर हाँका।

दूसरे दिन भी जब वह घर लौट रही थी तो उस ने वही आवाज़ पुनः सुनी। वही प्रश्न उस से फिर पूछा गया।

रात को देवी ने अपनी माँ को उस आवाज़ के बारे में कहा। माँ सारी

रात इस बात पर विचार करती रही। सुबह तक उस ने निश्चय कर लिया कि क्या किया जाना चाहिए।

"सुनो बेटी," वह अपनी लड़की से बोली—"मैं बता रही हूँ कि यदि आज शाम के समय भी तुम्हें वही आवाज सुनाई दे तो तुम्हें क्या करना होगा।"

"बताइये माँ," देवी ने उत्तर दिया।

"तुम उस आवाज को उत्तर देना," रानी शोभा ने कहा—"कल सुबह तुम मेरे घर आ जाओ, फिर मैं तुम से विवाह कर लूँगी।"

"लेकिन माँ," देवी बोली—"हम उसे जानते तक नहीं।"

"मेरी प्यारी देवी," माँ ने दुखी होकर कहा—"जिस स्थिति में हम जीवित हैं उस से ज्यादा बुरा और क्या हो सकता है। हमें इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेना चाहिए। ईश्वर हमारी सहायता करेगा।"

उस संध्या को जब देवी गायों को लेकर लौट रही थी उसे वही आवाज फिर सुनाई दी।

आवाज कोमल और दुख भरी थी।

"देवी, देवी क्या तुम मुझ से विवाह करोगी? क्या तुम मुझ से विवाह करोगी?" आवाज बोली।

देवी रुक गई। उस ने पीछे मुड़कर देखा लेकिन उसे कोई नहीं दिखाई दिया। वह हिचकिचायी। वह वहाँ से भाग जाना चाहती थी लेकिन फिर उसे माँ के शब्द याद आ गये। वह जल्दी से बोली,—"हाँ, यदि तुम कल सुबह मेरे घर आ जाओ तो मैं तुम से विवाह कर लूँगी।

तब वह बड़ी तेजी से गायों को हाँकती हुई घर चली गई।

अगले दिन सुबह रानी शोभा जरा जल्दी ही उठ गई। उस ने जाकर बाहर का दरवाजा खोला, देखने के लिए कि कोई प्रतीक्षा तो नहीं कर रहा।

वहाँ कोई भी न था। अचानक उसे एक धक्का सा लगा और वह स्तब्ध रह गई। एक बड़ा अजगर कुण्डली मारे सीढ़ियों पर बैठा था।

रानी शोभा सहायता के लिए चिल्लाई। देवी तथा नौकर भागे-भागे आये कि क्या बात है।

तभी एक आश्चर्यजनक बात हुई। अजगर बोला :—

"नमस्कार," उसका स्वर बहुत विनम्र था—"मुझे निमन्त्रित किया गया था इसलिये मैं आया हूँ। आपकी लड़की ने मुझ से वायदा किया था कि यदि मैं सुबह घर आ सकूँ तो वह मुझ से विवाह कर लेगी। मैं इस लिये आया हूँ।"

kissekahani.com

रानी शोभा की समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या करे। उसे तो यही आशा थी कि किसी दिन कोई सुन्दर नौजवान उसकी लड़की से विवाह करने आयेगा। उसने यह कभी नहीं सोचा था कि वह अजगर होगा!

एक नौकर भाग कर रानी रूपा के पास गया और उसे उसने सारी घटना बतला दी। रानी यह सुन कर प्रसन्न हुई। वह उसी समय अपने नौकरों के साथ रानी शोभा के घर गई।

"यदि राजकुमारी देवी ने किसी के साथ विवाह का वायदा किया है," वह बोली—"तो उसे अपना वायदा अवश्य निभाना चाहिए। रानी होने के कारण यह देखना मेरा कर्त्तव्य है कि वह अपना वायदा पूरा करे।"

उसी दिन विवाह हो गया। रानी शोभा और देवी के लिए यह कोई प्रसन्नता का समय नहीं था लेकिन इतने दुर्भाग्य सहने के बाद वे किसी भी प्रकार की विपत्ति का सामना करने को तैयार थीं।

विवाह के पश्चात् अजगर अपनी पत्नी के साथ उसके कमरे में गया।

सारी रात रानी शोभा ने प्रार्थना करते हुए बिताई कि उसकी बच्ची ठीकठाक रहे। दूसरे दिन बड़े सवेरे उसने देवी के कमरे का दरवाजा खटखटाया। एक सुन्दर नवयुवक ने दरवाजा खोला। देवी उसके पीछे खड़ी थी।

"मैं आपको कह नहीं सकता कि मेरी जान बचाने के लिए मैं आपका और देवी का कितना आभारी हूँ," वह नवयुवक बोला—"मैं एक शाप के कारण अजगर बन गया था। एक वन-देवता मुझसे क्रुद्ध थे और उन्होंने मुझे अजगर बना दिया। बाद में उन्हें अपनी करनी पर दुख हुआ। तब उन्होंने कहा कि यदि कोई राजकुमारी मुझसे विवाह कर लेगी तो मैं फिर से मनुष्य बन जाऊँगा। और अब देवी ने मुझ से विवाह कर लिया है, मेरा शाप उतर गया है। अब मैं फिर कभी अजगर नहीं बनूँगा।"

kissekahani.com

भी सुनो। यदि जंगल में कोई तुमसे विवाह का प्रस्ताव करे तो तत्काल कह देना कि तुम विवाह के लिए राज़ी हो, यदि वह अगले दिन सुबह हमारे घर आजाये।"

तारा माँ की इस योजना से भयभीत हो गई। वह गायों को जंगल में नहीं ले जाना चाहती थी। वह खूब रोई। लेकिन रानी फिर भी नहीं पिघली। तारा को उसकी आज्ञा माननी पड़ी।

तारा रोज सुबह गायों को जंगल में चराने के लिए ले जाती और फिर शाम के समय वापिस ले आती।

लेकिन उसने एक बार भी जंगल में किसी तरह की आवाज नहीं सुनी जो यह कह रही हो, "क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?"

फिर भी रानी निराश नहीं हुई। जंगल में कोई अजगर तो था नहीं जो तारा से विवाह का प्रस्ताव करता। इसलिए उसने खुद अजगर ढूँढ़ने का निश्चय किया।

उसने अपने नौकरों को एक अजगर लाने की आज्ञा दी। बहुत खोज करने पर काफी दिनों पश्चात् उन्हें एक बहुत बड़ा अजगर मिला। उसे पकड़ कर वे राजमहल में ले आये।

आखिरकार रानी का अभिप्रायः पूरा हो गया और उसने तारा का विवाह इस अजगर से कर दिया। अब रानी को सन्तोष हुआ।

विवाह की रात तारा तथा अजगर को एक कमरे में बन्द कर दिया गया।

रानी अधीरता से सुबह की प्रतीक्षा कर रही थी। रानी रूपा ने सवेरे सवेरे ही लड़की के कमरे का दरवाजा खटखटाया लेकिन कोई उत्तर न मिला। उसने जरा और जोर से दरवाजा खटखटाया लेकिन दरवाजा तब भी न खुला। रानी से और प्रतीक्षा न की गई और उसने धक्का देकर दरवाजा खोल दिया। मोटा अजगर जमीन पर पड़ा हुआ था लेकिन तारा का कहीं पता नहीं था।

रानी चीख पड़ी। महल में सभी ने उसका चीखना सुना। राजा और नौकर भागे आये कि क्या बात है।

"राजकुमारी कहाँ है?" सब चिल्लाये।

"वह तो अजगर के पेट में होंगी," रसोइया बोला—"देखो वह कितना मोटा हो गया है?"

रानी अब बड़ी जोर-जोर से रोने लगी। राजा भी रोने लगा।

रसोइया अपना सबसे बड़ा चाकू ले आया। वह बोला—"यदि वह अब तक जीवित हुई तो मैं राजकुमारी को बचाने की कोशिश करूँगा।"

उसने अजगर का पेट चीर डाला। तारा अच्छी भली जीवित थी। रसोइये ने उसे बाहर खींचा। वह चीख मारकर अपनी माँ की तरफ भागी।

अजगर की मृत्यु हो गई और साथ में रानी रूपा की इस इच्छा की भी कि तारा का विवाह देवी की तरह ही किसी योग्य और सम्पन्न नवयुवक से हो।

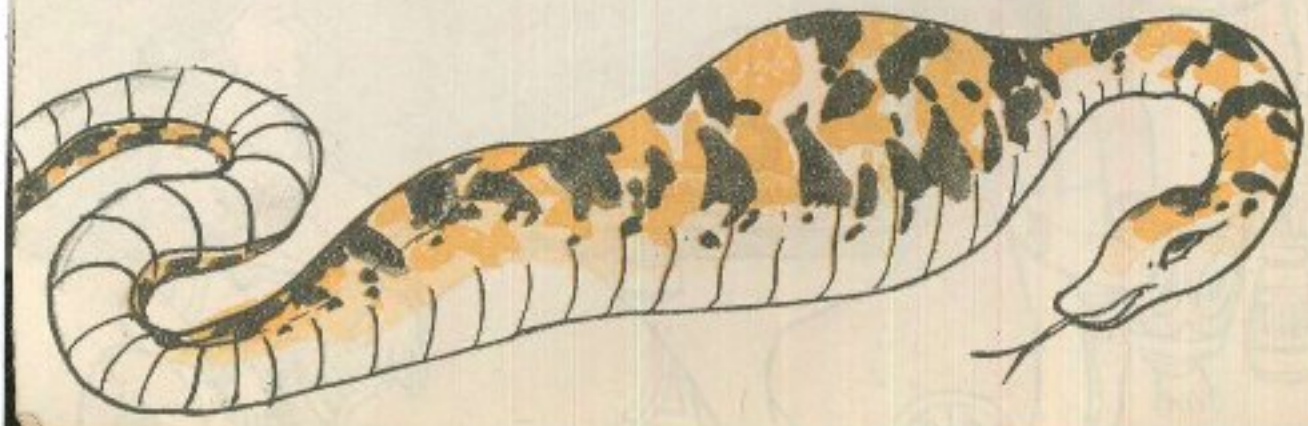

अरुण, वरुण और किरणमाला

एक समय की बात है एक बहादुर नवयुवक राजा बहुत बड़े साम्राज्य पर राज करता था। वह अपनी प्रजा को बहुत प्यार करता था और बड़ी सावधानी से उनकी देखभाल करता था। कई बार वह अपनी प्रजा का हाल चाल जानने के लिए छद्म वेष में घूमता भी था।

एक दिन जब वह एक घर के पास से गुजर रहा था तो उसने कुछ लड़कियों को आपस में बातचीत करते हुए सुना। वे लड़कियाँ तीन बहनें थीं। "मेरी अभिलाषा है कि मेरा विवाह राजा के रसोइये से हो," बड़ी लड़की बोली—"ताकि मैं रोज बढ़िया-बढ़िया खाना खा सकूँ।"

"मेरी इच्छा है कि मेरा विवाह राजा के गृहपाल से हो," दूसरी बहन बोली—"तब तो मैं सुन्दर-सुन्दर कपड़े पहन सकूँगी और सुन्दर घर में रह सकूँगी।"

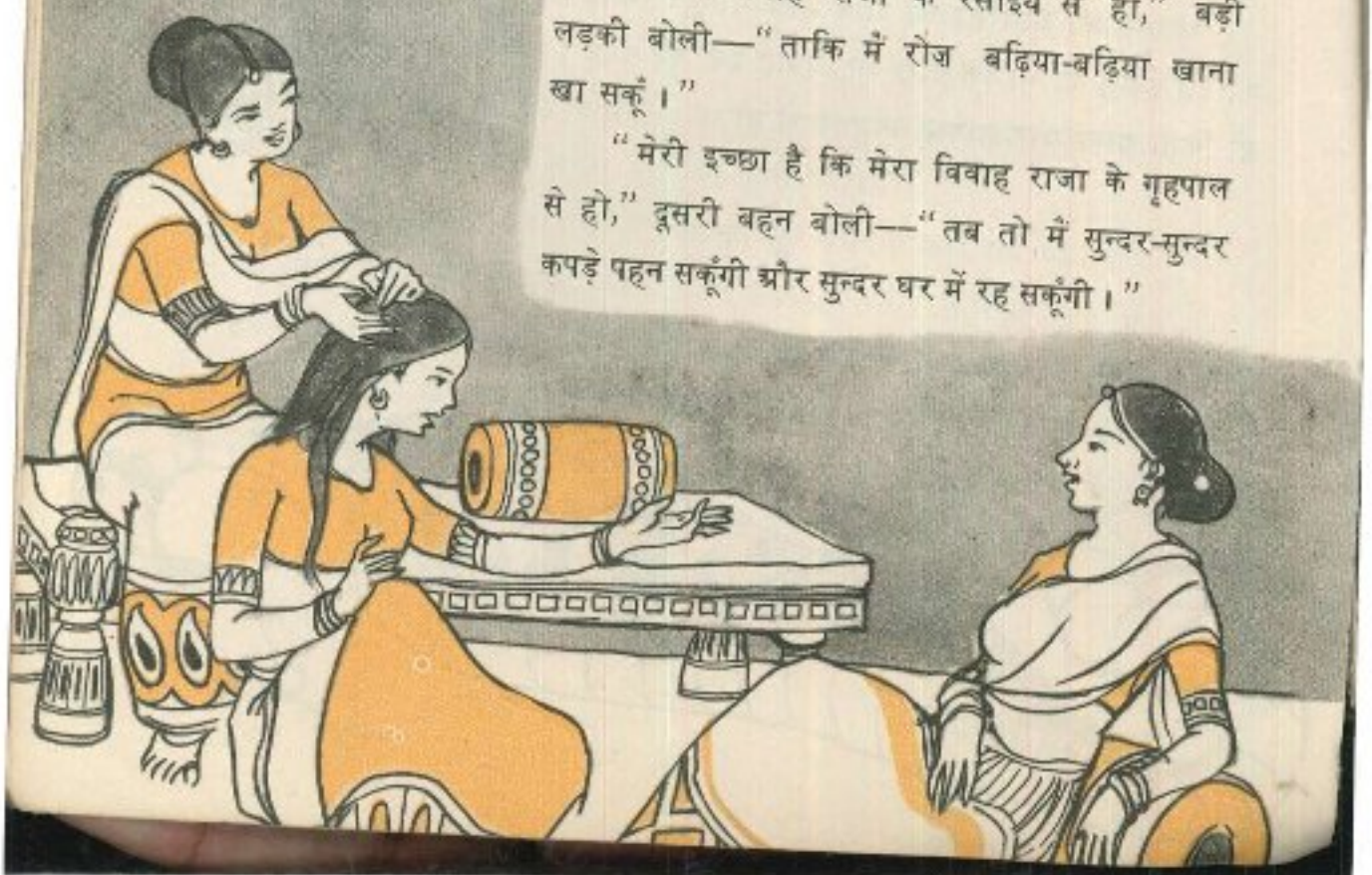

सब से छोटी लड़की कुछ न बोली ।

"तुम क्यों नहीं बतलाती कि तुम क्या चाहती हो ?" बाकी दो बहनों ने उससे पूछा । वह तब भी चुप ही रही । उसकी बहनें बार बार उसे उसकी इच्छा बताने के लिए अनुरोध करने लगीं ।

"यदि मैं अपनी इच्छा पूरी कर सकूँ," वह अन्त में बोली—"तो मैं राजा से विवाह करूँ । तब मैं रानी बन जाऊँगी और देश के शासन प्रबन्ध में राजा की सहायता कर सकूँगी ।"

राजा ने यह सब सुना और लौटकर महल में आ गया । दूसरे दिन राजा, रसोइया और गृहपाल सब दूल्हों की सज्जा में उन लड़कियों के घर जा पहुँचे । तीनों लड़कियों का विवाह उनकी इच्छानुसार हो गया । वे अपने अपने पति के घर गईं और प्रसन्नता से रहने लगीं । ज्यों-ज्यों समय गुजरने लगा, दोनों बड़ी बहनें छोटी बहन से, जो रानी थी, जलने लगीं । उन्हें लगता कि वह उनसे हर बात में अधिक सम्पन्न है ।

रानी के लड़का पैदा हुआ । उसकी दोनों बहनें बच्चे के जन्म के समय अपनी बहन के पास सहायता के लिए आई हुई थीं ।

रानी बच्चे को देख सके इससे पहले ही दोनों बहनें बच्चे को ले गयीं और उसके स्थान पर बिल्ली का एक बच्चा रख दिया ।

बच्चे को उन्होंने मिट्टी के एक बर्तन में बन्द कर के नदी में बहा दिया ।

राजा यह जानकर बड़ा परेशान हुआ कि उसकी पत्नी ने बिल्ली के बच्चे को जन्म दिया है । रानी भी बेचारी कई दिनों तक रोती रही ।

दो वर्ष गुजर गये । रानी के एक और पुत्र उत्पन्न हुआ लेकिन उसकी बहनों ने फिर उसे धोखा दिया ।

रानी बच्चे को देख सके इससे पहले ही उन्होंने बच्चे को हटा कर उसके

kissekahani.com

स्थान पर पक्षियों का एक जोड़ा रख दिया। उन्होंने पहले की तरह ही इस बच्चे को भी मिट्टी के बर्तन में बन्द कर के नदी में बहा दिया।

राजा और रानी अपने दुर्भाग्य पर बहुत दुखी थे। दो वर्ष पश्चात् रानी के एक और बच्चा उत्पन्न हुआ। इस बार यह एक सुन्दर लड़की थी। लेकिन दोनों बड़ी बहनों ने फिर पहले की तरह ही धोखा किया, बच्चे को हटा कर उसके स्थान पर एक गुड़िया रख दी। बच्ची को मिट्टी के बर्तन में बन्द कर के नदी में बहा दिया।

जब राजा ने यह सुना कि तीसरी बार भी रानी ने एक विचित्र वस्तु को जन्म दिया है तो उसे बड़ा धक्का लगा। उसने मन में सोचा कि रानी स्त्री है या जादूगरनी। इस विचार के कारण उसने रानी से अपना पीछा छुड़ाने का विचार किया और उसे राजमहल से निकल जाने की आज्ञा दे दी।

बेचारी रानी चली गई और एक झोपड़ी में रहने लगी। वह भिखारिन की तरह रहती थी क्योंकि उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था।

नदी में बहाये हुए बच्चे मरे नहीं थे। एक ब्राह्मण उसी नदी के किनारे कुछ दूरी पर रहता था। ब्राह्मण नदी में स्नान कर रहा था जब पहला मिट्टी का बर्तन बहता हुआ आया। उसने पानी में से बर्तन को निकाला और उसके भीतर नवजात शिशु को देखकर आश्चर्य में पड़ गया।

ब्राह्मण के कोई बच्चा नहीं था। उसने बच्चे को घर ले जाकर अपनी पत्नी को दे दिया।

"देखो, ईश्वर ने हमें पुत्र दिया है," वह बोला—"हमें बड़ी सावधानी से इसे पालना चाहिए।"

ब्राह्मण और उसकी पत्नी बच्चे की देखरेख करते रहे। उन्होंने उसका नाम अरुण रखा।

kissekahani.com

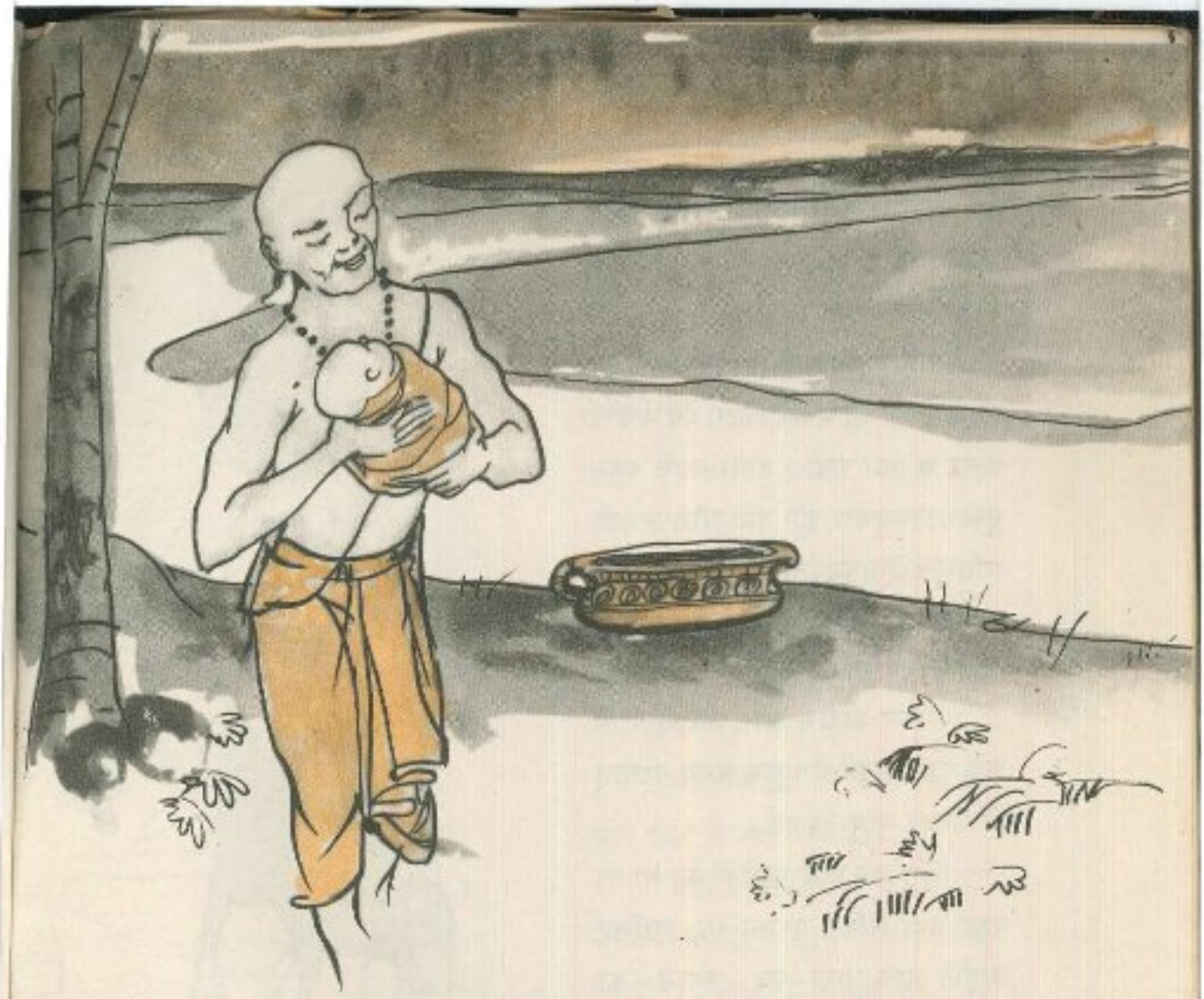

दो वर्ष बीत गये। ब्राह्मण फिर एक दिन नदी में स्नान कर रहा था जब दूसरा बर्तन बहता हुआ आया। वह बच्चे को लेकर भागा-भागा घर आया। उस की पत्नी और वह एक पुत्र और पा जाने पर बहुत प्रसन्न थे। इसका नाम उन्होंने वरुण रखा।

"यदि एक लड़की भी होती तो कितना अच्छा होता," ब्राह्मण की पत्नी बोली। दो वर्ष और गुजर गये और ब्राह्मण को तीसरा बच्चा भी नदी में बहता हुआ मिला। "लो तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई," वह अपनी पत्नी से बोला—"यह रही तुम्हारी पुत्री।"

ब्राह्मण और उसकी पत्नी बहुत प्रसन्न थे । इस लड़की को उन्होंने किरणमाला नाम दिया ।

ब्राह्मण धनवान था और उस ने इन तीनों बच्चों को अच्छी शिक्षा देने में कोई कसर न उठा रखी । दोनों लड़के बहुत सुन्दर नवयुवक हो गये और लड़की अतिसुन्दरी नवयुवती । किसी चीज़ की कमी न थी और वे बड़े आनन्द से रहते थे ।

लेकिन ब्राह्मण और उसकी पत्नी अब वृद्ध हो गये थे । कुछ समय पश्चात् ही उनकी मृत्यु हो गई ।

जिस घर में वे रहते थे वह था तो बहुत बड़ा लेकिन पुराना था, इसलिए उन्होंने एक नया घर बनाने का निश्चय किया ।

अरुण, वरुण और किरणमाला ने अपना नया घर महल जैसा बड़ा और सुन्दर बनवाया । उन्होंने इसे बहुत सुन्दर और मूल्यवान चीज़ों से सजाया और इसके चारों ओर एक सुन्दर बाग भी लगाया ।

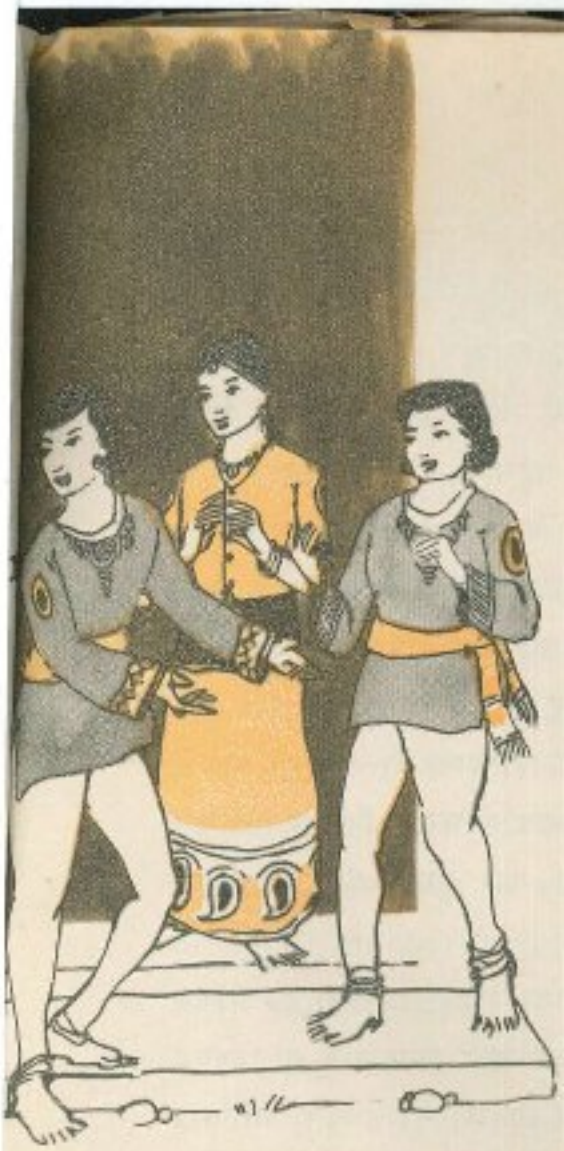

एक दिन एक सन्यासी उनके घर आया । अरुण, वरुण और किरणमाला ने उसका बहुत आदर-सत्कार किया । इन तीनों बच्चों से सन्यासी बहुत प्रभावित हुआ । उसने उनकी प्रशंसा की और उनके सुन्दर घर और बगीचे को भी बहुत सराहा ।

"यहाँ तुम्हारे पास सब कुछ है," वह बोला—"केवल एक चीज की कमी है ।"

"वह क्या है ?" दोनों भाइयों और बहन ने प्रश्न किया ।

"यहाँ से बहुत दूर एक पर्वत है," सन्यासी बोला—"उस पर्वत के शिखर पर एक सोने का वृक्ष है और उस पर दो तोते रहते हैं । उन तोतों को अपने घर ले आओ तभी तुम्हें पूर्ण शान्ति और आनन्द मिलेगा ।"

दोनों भाई और उनकी बहन ने बहुत ध्यान से सन्यासी की बात सुनी । "लेकिन उस पर्वत तक जाने और तोतों को लाने के लिए बड़े साहस की आवश्यकता है," सन्यासी ने आगे कहा—"एक मुश्किल यह है कि जब तुम तोते लेकर लौट रहे होगे तो किसी भी कारण से पीछे मुड़ कर न देखना । यदि तुम ने मुड़ कर पीछे देखा तो एकदम चट्टान बन जाओगे ।"

"हम कोशिश तो अवश्य करेंगे," तीनों बोले—"हम आपके कहे अनुसार ही चलेंगे और तोतों को घर ले आयेंगे।"

सन्यासी ने उन्हें आशीर्वाद दिया और चला गया।

सब से पहले अरुण तोतों को लेने के लिए रवाना हुआ। वह कई दिनों की यात्रा के पश्चात् पर्वत की चोटी पर जा पहुँचा। वहाँ उसे सुनहरा वृक्ष मिला और उस पर दो तोते भी। उसने पेड़ पर चढ़ कर तोतों को पकड़ लिया।

जब वह लौट रहा था तो अचानक ही ऊँची-ऊँची आवाजें उसे पीछे से बुलाने लगीं। उसने पीछे मुड़ कर देखा और उसी क्षण वह चट्टान बन गया। तोते उड़ कर वापिस सुनहरे वृक्ष पर चले गये।

बहुत दिन गुज़र गये। जब अरुण वापिस नहीं आया तो वरुण यह जानने के लिए कि अरुण को क्या हुआ, तोतों की तलाश में घर से निकला। लेकिन वरुण का भी वही हाल हुआ जो अरुण का हुआ था। वह भी चट्टान बन गया।

अपने भाइयों के लौट आने की किरणबाला ने बहुत प्रतीक्षा की लेकिन उनका तो कहीं नामोनिशान ही न था। अन्त में उसने स्वयं जाने का निश्चय किया। उसने पुरुष का वेष धारण किया और निकल पड़ी। बहुत दिनों बाद वह पर्वत पर जा पहुँची। उसने पेड़ को खोज लिया और तोतों को भी पकड़ लिया। अब वह पर्वत से नीचे उतरने लगी।

सहसा उसने एक ऊँची आवाज़ सुनी—"किरणमाला, किरणमाला!" लेकिन किरणमाला ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसे सन्यासी की चेतावनी याद थी और वह जल्दी जल्दी चलती गई।

अब बहुत सी आवाजें उसके पीछे चिल्लाने लगीं—

"किरणमाला, किरणमाला, वापिस आओ।"

kissekahani.com

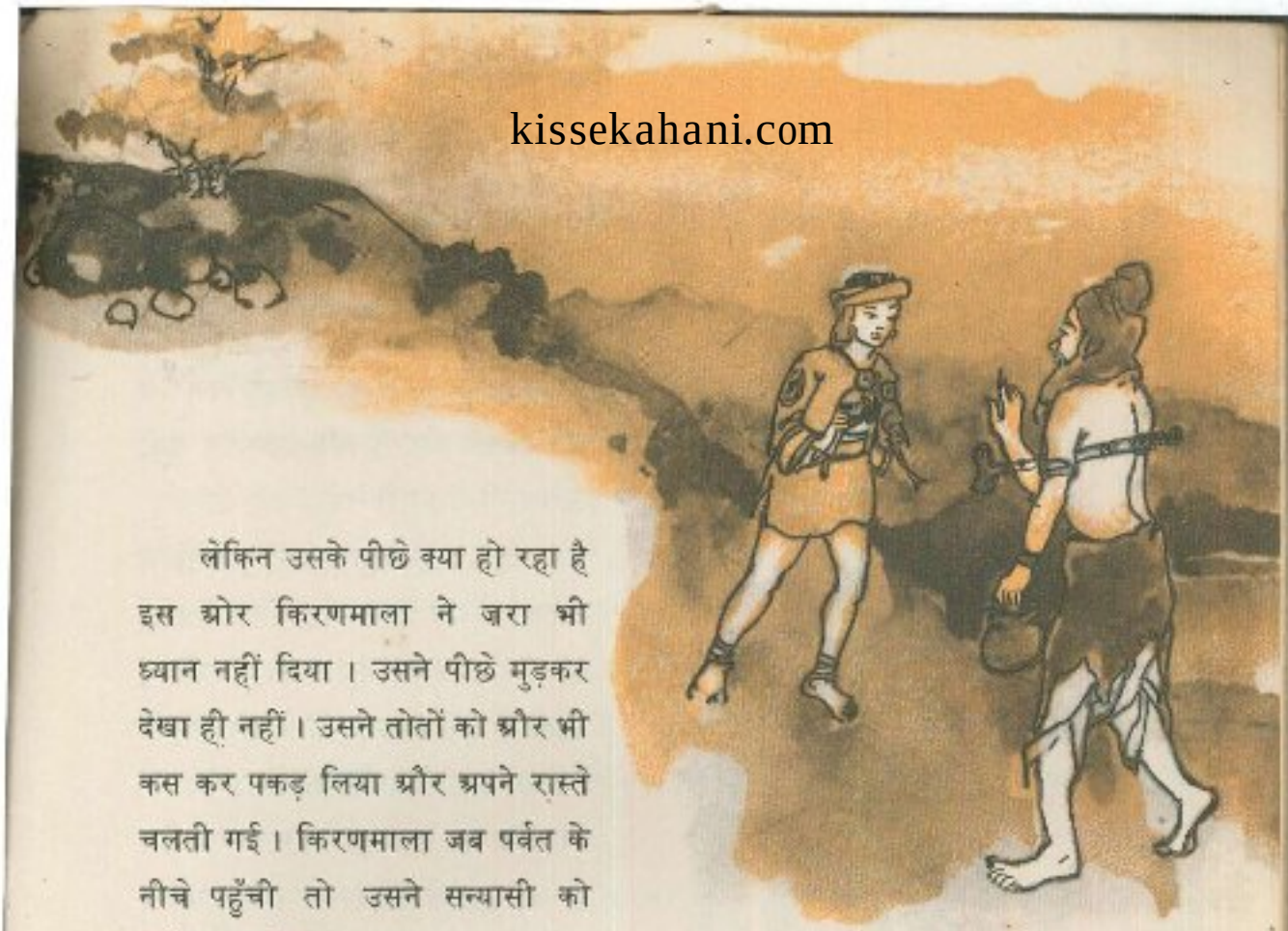

लेकिन उसके पीछे क्या हो रहा है इस ओर किरणमाला ने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। उसने पीछे मुड़कर देखा ही नहीं। उसने तोतों को और भी कस कर पकड़ लिया और अपने रास्ते चलती गई। किरणमाला जब पर्वत के नीचे पहुँची तो उसने सन्यासी को प्रतीक्षा करते हुए पाया।

"तुम दुनिया की सबसे बहादुर लड़की हो," वह बोला—"तुमने वह कर दिखाया है जो हज़ारों नवयुवक भी करने में असमर्थ हुए थे।"

सन्यासी ने तब उन चट्टानों की ओर संकेत किया जो उसके पीछे बिखरी पड़ी थीं। "यह पवित्र जल का घड़ा लो," साधु उस को घड़ा देते हुए बोला—"और चट्टानों पर पानी छिड़क दो।"

किरणमाला ने जाकर उन चट्टानों पर पानी छिड़क दिया।

जैसे ही उसने पानी छिड़का चट्टानें लुप्त हो गईं और उनके स्थान पर सैकड़ों नवयुवक उठ खड़े हुए। उन्होंने झुककर उसका अभिवादन किया। फिर से जीवन पाने के लिए उन सबने उसका बहुत आभार माना। इन नवयुवकों में उसके भाई अरुण और वरुण भी थे।

kissekahani.com

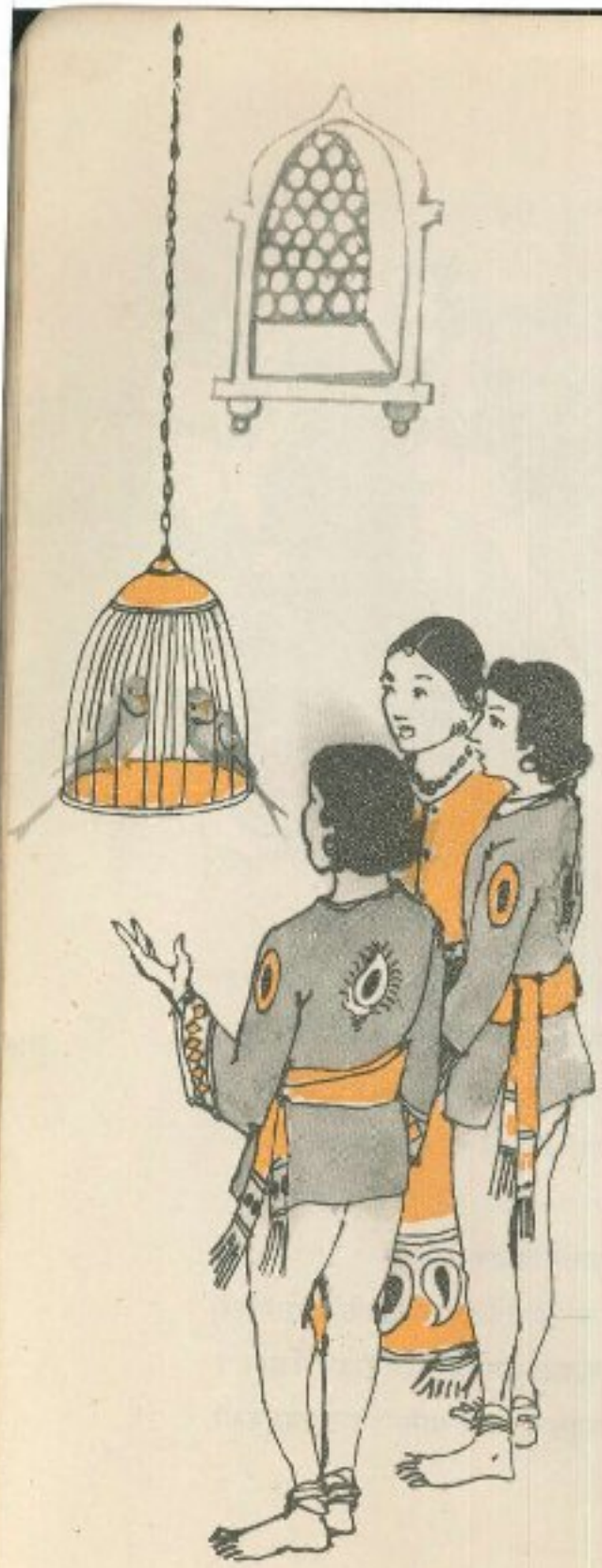

अरुण, वरुण और किरणमाला ने वृद्ध सन्यासी से आज्ञा ली और घर आ गये।

उन्होंने तोतों को सुनहरे पिंजरे में रख दिया और उनकी देखभाल बड़ी सावधानी से करने लगे।

तोते उन्हें बहुत सारे मामलों में सलाह भी देते। एक दिन तोतों ने उन्हें सलाह दी कि जो वृद्धा स्त्री झोपड़ी में रहती है उसे वे घर ले आयें। तोतों ने उस वृद्धा स्त्री का अतापता भी बतलाया। वे उस स्त्री को घर ले आये।

तब तोते बोले--"इससे अपनी माँ जैसा व्यवहार करो और खूब सावधानी से इसकी देखभाल करो।"

उन्होंने तोतों की सलाह को मान लिया। वह स्त्री उनके साथ इस तरह रहने लगी जैसे उनकी माँ हो।

एक दिन तोतों ने अरुण, वरुण और किरणमाला से कहा कि वे राजा को निमन्त्रण दें। उन्हें यह भी समझाया कि किस तरह खाना बनवायें और कैसे परोसें।

उन्होंने दावत का शानदार आयोजन किया। राजा और कई प्रमुख लोगों को निमन्त्रित किया गया। राजा और अतिथियों का खूब शानदार स्वागत किया गया।

फिर खाने का समय आ गया।

किरणमाला ने सबको खाने वाले कमरे में बुलाया। तोते अपने पिंजरे में बैठे सब कुछ देख रहे थे। किरणमाला ने सबको बैठने के लिए कहा। राजा को एक विशेष मेज़ पर बैठाया गया। खाना परोसा गया। राजा का खाना सोने की तश्तरियों में परोसा गया। राजा ने एक के बाद एक व्यंजन चखे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि सब चीज़ें पत्थरों से बनाई गई थीं। उनमें से वह कुछ भी नहीं खा सका।

राजा क्रोधित हो उठा। वह किरणमाला और उसके भाइयों को घूरता हुआ उठ खड़ा हुआ।

"तुमने पत्थरों से बना खाना परोस कर राजा का अपमान करने की हिम्मत कैसे की?" वह गुस्से में चिल्लाया।

इससे पहले कि दूसरा कोई उत्तर देता, एक तोता बोल उठा—

"महाराज," वह बोला—"पहले हमारे प्रश्नों का उत्तर दीजिए फिर हम आपके प्रश्नों का उत्तर देंगे।"

राजा ने अचरज से तोते की ओर देखा।

"क्या प्रश्न है तुम्हारा?" राजा ने पूछा।

"क्या कोई स्त्री," दूसरे तोते ने पूछा—"जो हाड़ माँस की बनी है बिल्ली, पक्षी या गुड़िया को जन्म दे सकती है?"

राजा के दिमाग में जैसे बिजली कौंधी कि बहुत वर्ष पहले उसे यही बताया गया था कि उसकी नवयुवती रानी ने पहले बिल्ली के बच्चे को, फिर पक्षियों को और फिर गुड़िया को जन्म दिया है। अब सहसा उसने अनुभव किया कि तोते का कहना ठीक है। ऐसा कैसे हो सकता है?

"नहीं," राजा ने उत्तर दिया—"यह कैसे हो सकता है। लेकिन मेहरबानी करके मुझे सच-सच बताओ," वह कहता गया—"वर्षों पहले क्या हुआ था?"

तोतों ने उसे उस समय का सारा हाल बताया जब उसके बच्चे पैदा हुए थे।

"तुम्हारे बच्चे अब यहाँ हैं," वे बोले—"अरुण, वरुण और किरणमाला।"

राजा की प्रसन्नता का वारापार न रहा। उसने अपने पुत्र और पुत्री को गले से लगाया। अब वह अपनी खोई हुई रानी के लिए विलाप करने लगा।

"अब मेरी पत्नी जाने कहाँ है जिसे मैंने मूर्खतावश निकाल दिया था?" उसने तोतों से पूछा।

"वह यहीं अपने बच्चों के पास ही है," तोतों ने उत्तर दिया।

यह सुनकर कि रानी वहीं है राजा, अरुण, वरुण और किरणमाला आश्चर्यचकित रह गये।

अब बच्चे भाग कर भीतर गये और उस स्त्री को बाहर ले आये जिसे तोतों की सलाह पर वे घर ले आये थे।

"तो तुम वास्तव में ही हमारी माँ हो।" वे खुशी से बोले। रानी ने बच्चों को गले से लगाया। उसकी आँखों में खुशी के आँसू आ गये।

राजा, रानी और अपने बच्चों को राजमहल में ले गया। दोनों तोते उनके साथ गये। फिर वे सब कई वर्ष तक हँसी-खुशी से जीवित रहे।

kissekahani.com

हुंचिबिल्ली

बहुत पहले एक राजा था। वह राजा था जंगल के सब जानवरों का और आसाम के घने जंगल की एक गुफा में रहता था। सारे जानवर उसके प्रति वफादार थे

राजा की दो लड़कियाँ थीं। वे अब दोनों विवाह के योग्य बड़ी हो गई थीं। उसने कुछ जानवरों से अपनी लड़कियों के लिए योग्य वरों की खोज करने के लिए कहा।

एक दिन एक बहुत बड़ा जंगली सुअर पास के गाँव में जाकर फसल को नष्ट करने लगा। गाँववाले इस भयानक सुअर से डर गये। किसी में इतना साहस नहीं था कि उस सुअर को भगा सके।

गाँव में एक नवयुवक था जो बहुत हृष्टपुष्ट और बहादुर था। वह एक तेज बरछा लेकर सुअर पर लपका। सुअर ने उस पर आक्रमण किया पर उसने सुअर को बरछे से घायल कर दिया। सुअर मुड़ा और भाग खड़ा हुआ। वह

kissekahani.com

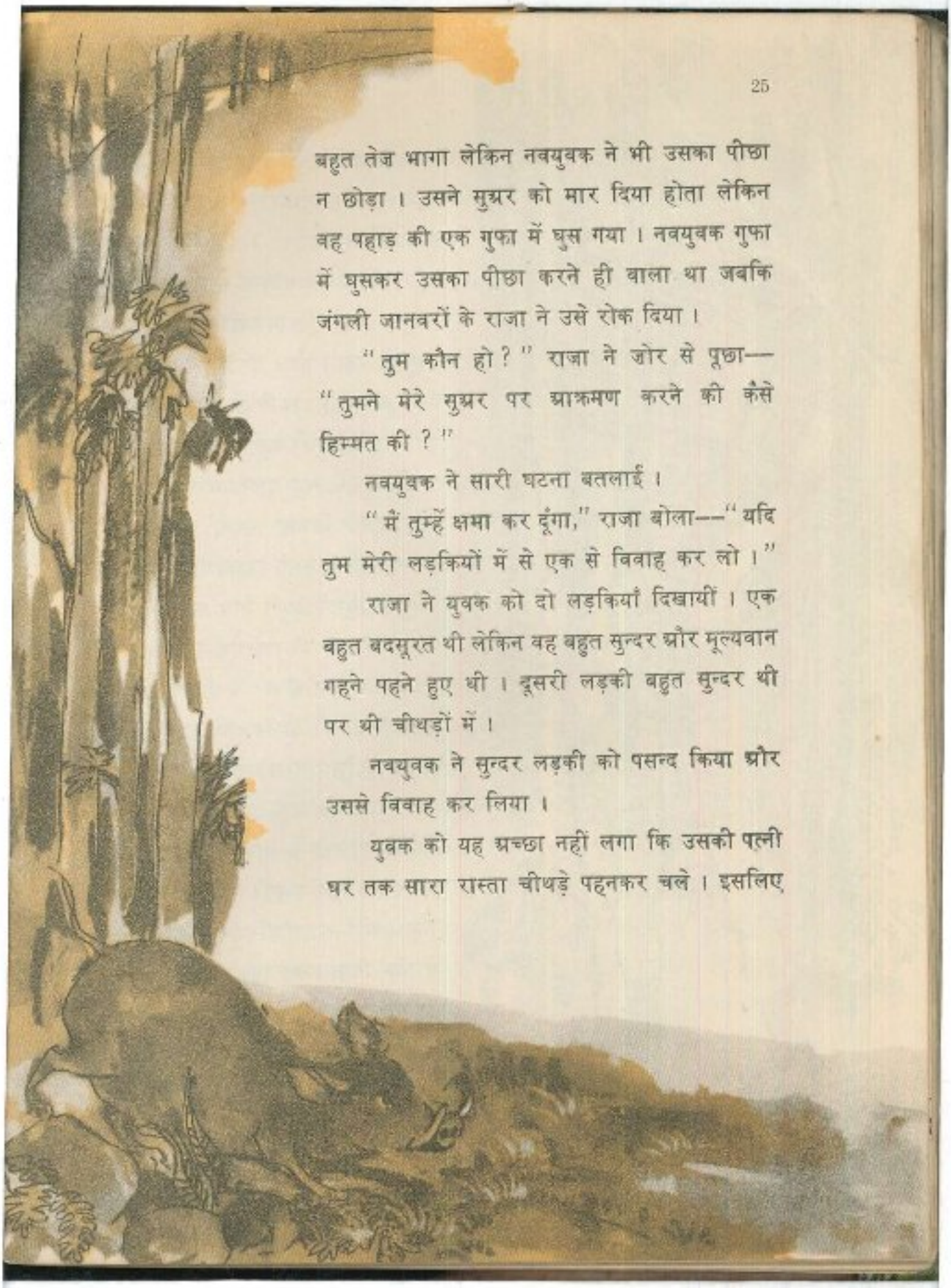

बहुत तेज भागा लेकिन नवयुवक ने भी उसका पीछा न छोड़ा। उसने सुअर को मार दिया होता लेकिन वह पहाड़ की एक गुफा में घुस गया। नवयुवक गुफा में घुसकर उसका पीछा करने ही वाला था जबकि जंगली जानवरों के राजा ने उसे रोक दिया।

"तुम कौन हो?" राजा ने जोर से पूछा—"तुमने मेरे सुअर पर आक्रमण करने की कैसे हिम्मत की?"

नवयुवक ने सारी घटना बतलाई।

"मैं तुम्हें क्षमा कर दूंगा," राजा बोला—"यदि तुम मेरी लड़कियों में से एक से विवाह कर लो।"

राजा ने युवक को दो लड़कियाँ दिखायीं। एक बहुत बदसूरत थी लेकिन वह बहुत सुन्दर और मूल्यवान गहने पहने हुए थी। दूसरी लड़की बहुत सुन्दर थी पर थी चीथड़ों में।

नवयुवक ने सुन्दर लड़की को पसन्द किया और उससे विवाह कर लिया।

युवक को यह अच्छा नहीं लगा कि उसकी पत्नी घर तक सारा रास्ता चीथड़े पहनकर चले। इसलिए

उसने लड़की को एक टोकरी में बिठा दिया और टोकरी उठाकर घर की ओर चल पड़ा।

रास्ता एक गाँव में से होकर जाता था। वहाँ हुंचिबिल्ली नाम की दुष्ट युवती रहती थी। उसने इस युवक को एक बड़ी सी टोकरी उठाये हुए देखा।

हुंचिबिल्ली बहुत ही बदसूरत थी। लेकिन उसे यह युवक अच्छा लगा। वह इससे विवाह करना चाहती थी और इसलिए उसने इसका पीछा किया।

नवयुवक अपने गाँव पहुँच गया। उसने टोकरी को एक पेड़ के नीचे रख दिया। वह भाग कर अपने रिश्तेदारों तथा मित्रों को अपनी पत्नी का स्वागत करने के लिए बुलाने गया।

युवक के जाने के पश्चात् हुंचि-बिल्ली टोकरी के पास गई और उसे खोला तो उसमें लड़की को पाया। उसने लड़की को निकाला और उसे पास ही नदी में फेंक दिया। वह स्वयं टोकरी में बैठ गई और ऊपर से ढक्कन बन्द कर लिया।

जब नवयुवक अपने सम्बन्धियों

और मित्रों के साथ लौटा तो बड़ी प्रसन्नता से उसने टोकरी को खोला।

"देखो," वह बोला—"यह रही मेरी सुन्दर पत्नी, जंगल के राजा की लड़की।" लोगों ने टोकरी में झांककर देखा और हँसने लगे। नवयुवक को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने स्त्री की ओर देखा। यह देख कर वह स्तब्ध रह गया कि वह बहुत ही बदसूरत थी।

"नहीं, नहीं," वह बोला—"यह मेरी पत्नी नहीं है।"

"लेकिन तुमने इससे विवाह किया है," उसके मित्र बोले—"अब और कोई चारा नहीं इसे घर ले जाओ और पत्नी की तरह रखो।"

युवक अब क्या करता—इस स्त्री को घर ले जाने के सिवाय दूसरा रास्ता था भी नहीं। वह स्त्री उसके साथ घर में रहने लगी।

जिस लड़की को नदी में फेंका गया था वह किनारे पर सन्तरे के पेड़ के रूप में उग आई। उस पेड़ पर एक बड़ा सा संतरा लगा।

एक दिन युवक ने फल को देखा। वह उसे तोड़ कर घर ले आया और उसी टोकरी में रख दिया जिसमें वह अपनी पत्नी को उठा कर लाया था।

युवक तो अपने खेतों में चला गया और हुंचिबिल्ली ईंधन इकट्ठा करने जंगल।

शाम के समय जब युवक घर लौटा तो उसने देखा कि उसका बिछौना ठीक ढंग से बिछा हुआ है और उस पर भीनी सुगन्ध वाले फूल बिखरे हुए हैं। इसके विपरीत हुंचिबिल्ली का बिछौना गन्दगी और मरी हुई मक्खियों से भरा पड़ा था। वह आश्चर्य करने लगा कि ऐसा किसने किया होगा।

दूसरे दिन फिर शाम के समय युवक घर आया तो उसने देखा कि उसका बिछौना बहुत सुन्दर ढंग से सजा हुआ था जबकि हुंचिबिल्ली का बिछौना फिर गंदा था। युवक ने इस विचित्र घटना का पता लगाने का निश्चय किया। अगले दिन वह काम पर गया तो, लेकिन लौट आया और कमरे के एक कोने में छिप गया।

थोड़ी देर बाद उसने पुरानी टोकरी को खुलते देखा। उसमें से निकली जंगल के राजा की कन्या, जिससे उसका विवाह हुआ था। वह उसका बिछौना ठीक करने लगी। तत्काल युवक ने बाहर निकल कर उसका हाथ पकड़ लिया।

"इतने समय तक तुम कहाँ थी," उसने पूछा—"तुम मुझे छोड़ कर क्यों चली गई थीं?"

तब लड़की ने सारी घटना कह सुनाई जो कि उस पर बीती थी।

हुंचिबिल्ली जब शाम को घर लौटी तो युवक बोला—"चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे माता-पिता से मिला लाऊँ। आओ, इस टोकरी में बैठ जाओ। मैं तुम्हें वहाँ उठा कर ले चलूंगा।"

हुंचिबिल्ली को उसका कहना मानना पड़ा।

हुंचिबिल्ली को टोकरी में बिठा वह सीधा नदी किनारे ले गया। उसे उसने नदी में फेंक दिया और सीधा घर आ गया।

उसकी पत्नी—जंगल के राजा की कन्या—उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसके पश्चात् बहुत दिनों तक वे सुखपूर्वक रहे।

kissekahani.com

सोमदत्त और मरा हुआ चूहा

एक बार अचानक ही एक धनी व्यापारी की मृत्यु हो गई। उस के दुष्ट सम्बन्धियों ने उस की विधवा पत्नी से सब कुछ छीन लिया। इससे वह इतना डर गई कि अपने नन्हे पुत्र सोमदत्त को साथ लेकर वह वहाँ से दूर चली गई।

वहाँ वह एक छोटी सी झोपड़ी में रहकर एक धनी व्यक्ति के यहाँ नौकरानी का काम करने लगी। इससे वह अपना और अपने बच्चे का पेट पालती।

वह अपने पुत्र से बहुत प्यार करती थी और उस का पालन-पोषण भी बड़ी सावधानी से करती थी। अपनी छोटी सी आय से जितनी शिक्षा वह दिला सकती थी उस ने सोमदत्त को दिलाई। जब सोमदत्त सोलह वर्ष का हुआ तो उस की माँ ने सोचा कि वह अब काम करने योग्य हो गया है।

"मेरे प्यारे बच्चे," एक दिन माँ सोमदत्त से बोली—"तुम एक व्यापारी के पुत्र हो। तुम्हें अपने पिता की तरह ही कोई व्यापार शुरू करना चाहिए, लेकिन हमारे पास धन नहीं है। इस शहर में एक धनी व्यापारी रहता है जो होनहार युवकों को काम शुरू करने के लिए धन उधार देता है। तुम उस के पास जाओ और सहायता माँगो।"

दूसरे दिन सुबह नवयुवक सोमदत्त उस धनी व्यापारी के घर गया। वहाँ पहुँचकर उसे पता चला कि व्यापारी का मिज़ाज तो बिगड़ा हुआ है। वह किसी दूसरे नवयुवक पर गुस्सा उतार रहा था।

"तुम्हें एक अच्छा खासा व्यापार शुरू करने के लिए मैंने काफी धन

kissekahani.com

दिया था," वह कह रहा था—" तुम ने उस का किया क्या ? तुम ने न कोई मुनाफा कमाया; न उधार पर सूद देने के लिए पैसा बचाया और अब मूलधन भी गँवा बैठे हो। तुम जानते ही नहीं कि व्यापार किया कैसे जाता है।"

" नहीं, श्रीमान जी," नवयुवक बोला।

" देखो !" व्यापारी ने एक मरे हुए चूहे की ओर संकेत करते हुए कहा, " एक चतुर आदमी इस मरे हुए चूहे को भी पूँजी मान कर, व्यापार कर के पैसा पैदा कर सकता है।"

सोमदत्त ने उस मरे हुए चूहे की ओर देखा। उस ने एक क्षण कुछ सोचा और चूहे को उठाकर व्यापारी के पास गया।

" आप से पूँजी के रूप में यह चूहा मैं उधार ले रहा हूँ," वह बोला—" इस की रसीद मैं आप को दे रहा हूँ।"

व्यापारी ने सोमदत्त की ओर देखा और हँस पड़ा। लेकिन सोमदत्त गम्भीर था। उसने व्यापारी को रसीद दी और मरे हुए चूहे को उठा कर बाहर आ गया।

सोमदत्त जब मरे हुए चूहे को उठा कर सड़क पर जा रहा था तो एक व्यापारी ने अपनी दुकान पर से ही आवाज़ लगाई।

"अरे, इस मरे हुए चूहे को फेंकना मत," व्यापारी बोला—"मेरी बिल्ली को दे दो, वह भूखी है।"

सोमदत्त ने मरा हुआ चूहा व्यापारी की बिल्ली को दे दिया। इस के बदले उस ने सोमदत्त को दो मुट्ठी मटर दिये।

सोमदत्त ने मटरों को छौंक कर पीस लिया। फिर उस ने घड़ा भर पानी लिया और शहर के बाहर चौराहे पर जा बैठा।

वहाँ पर उसने बहुत सारे लकड़हारों को जंगल से लकड़ियों का बोझ लेकर लौटते हुए देखा। वे बहुत थके हुए थे। सोमदत्त ने उन्हें पीसी हुई मटर और पानी दिया।

लकड़हारे बहुत खुश हुए। वे सोमदत्त के आभारी थे। प्रत्येक ने उसे दो दो लकड़ियाँ दे दी।

सोमदत्त ने ये लकड़ियाँ बाजार में बेच दीं। इन के बेचने से जो पैसे उसे मिले—कुछ से उसने और मटर

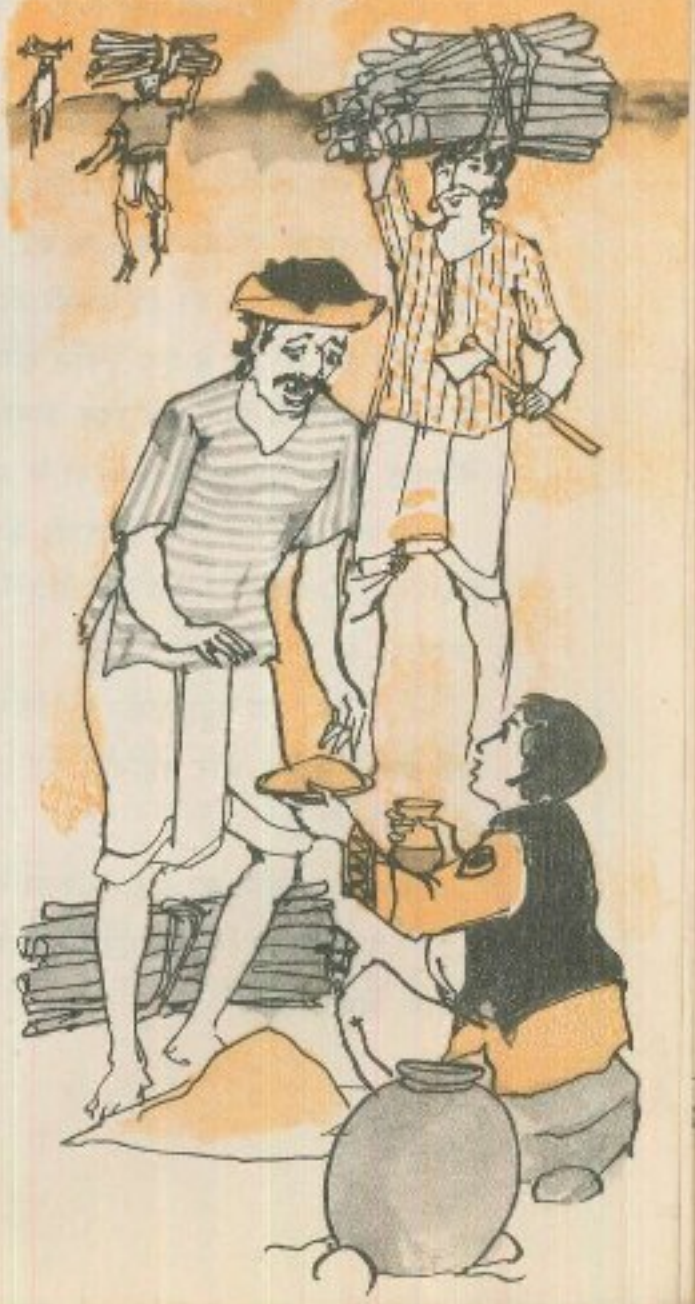

खरीदे और बाकी पैसे अपने पास जमा कर लिए ।

दूसरे दिन सोमदत्त फिर चौराहे में जाकर खड़ा हो गया तथा लकड़हारों को मटर और पानी देने लगा। उन्हों ने फिर बदले में लकड़ियां दी। ये लकड़ियां भी उस ने बाजार में जाकर बेच दी ।

कई दिन इस तरह करने से सोमदत्त ने लकड़ियों का छोटा सा धन्धा करने के लिए काफी पैसा बचा लिया । तीन दिन तक उसने लकड़हारों से सारी लकड़ियां खरीद लीं । फिर उस ने उन लकड़ियों को एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया ।

वर्षा शुरू हो गई । कई दिनों तक वर्षा होती रही । शहर में ईंधन की कमी हो गई । लकड़ी का मूल्य एकदम बढ़ गया ।

सोमदत्त ने जमा की हुई लकड़ी को अच्छे दामों पर बेच दिया ।

इस पैसे से उस ने एक दुकान खोल ली । अपनी निपुणता और उद्योग से वह व्यापार में दिन प्रति दिन उन्नति करता गया । कुछ ही वर्षों में शहर के बहुत धनी नवयुवक व्यापारियों में उसका नाम लिया जाने लगा ।

लेकिन वह उस धनी व्यापारी को भूला नहीं था जिस से उस ने मरा हुआ चूहा लिया था । एक दिन उस ने एक सोने का चूहा बनवाया और उस व्यापारी से मिलने चला ।

" मैं आप का बहुत कृतज्ञ हूँ, सेठ जी," वह नम्रता से बोला—" आप ने मुझे अच्छी सलाह और सहायता दी तथा व्यापार करने के लिए पूंजी भी उधार दी ।"

अब उसने सोने का चूहा निकाल कर व्यापारी को दे दिया ।

" यह क्या है ?" व्यापारी ने आश्चर्य से कहा—" क्या मैं ने तुम्हें कुछ उधार दिया था ?"

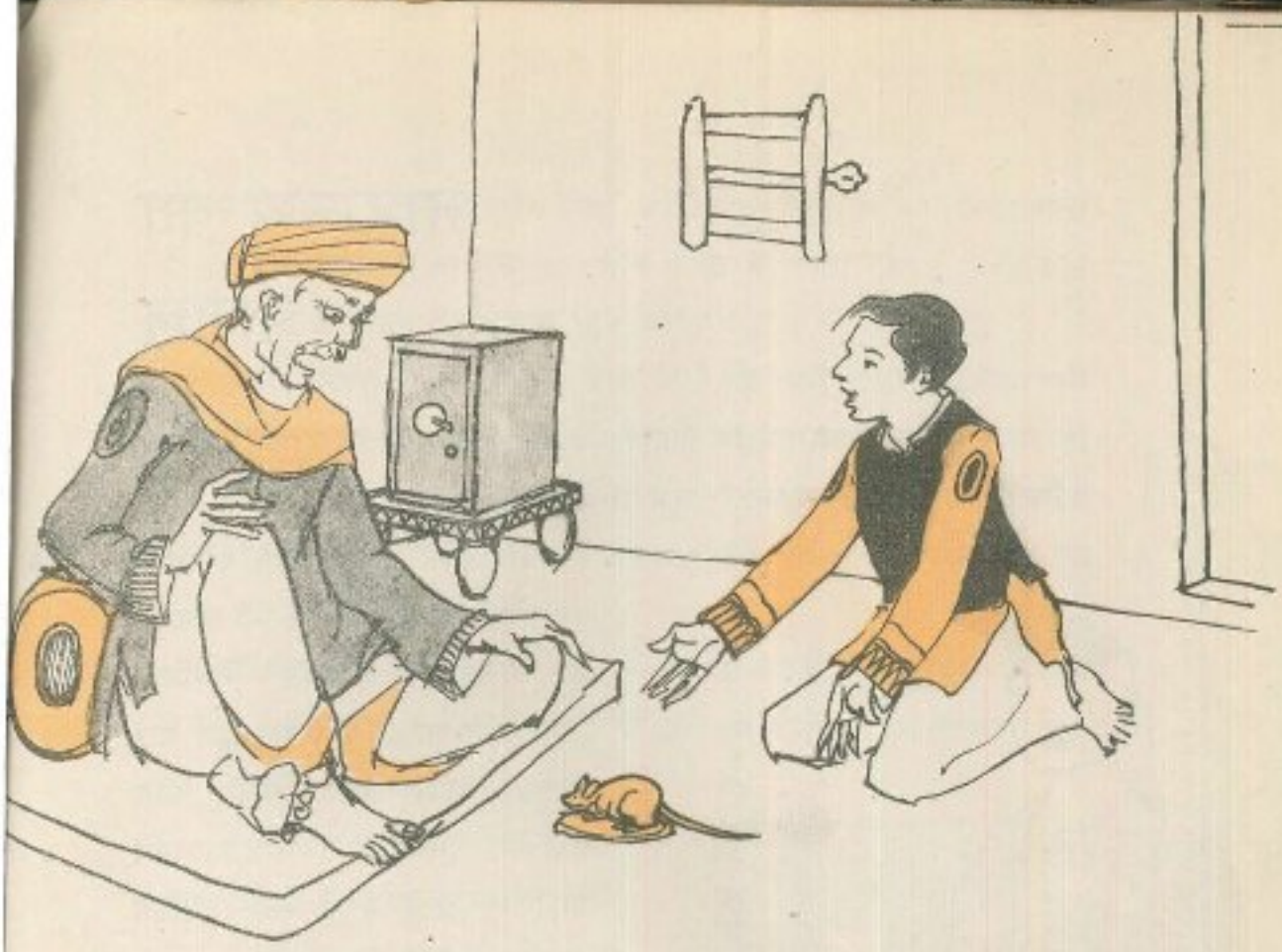

"जी हाँ, आप ने दिया था," सोमदत्त ने उत्तर दिया--"आप ने मुझे एक मरा हुआ चूहा उधार दिया था।"

तब सोमदत्त ने व्यापारी को उस दिन से लेकर अब तक की सारी कहानी कह सुनाई। धनी व्यापारी सोमदत्त से मिल कर और उस की कहानी सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ। सोमदत्त पर वह इतना मुग्ध हुआ कि उस ने अपनी लड़की का विवाह भी उसी से कर दिया।

सोमदत्त की माँ को अपने बेटे पर बड़ा गर्व था।

इस के पश्चात सोमदत्त, उस की पत्नी और माँ बड़े आनन्द और ऐश्वर्य से रहने लगे।

kissekahani.com

नारानथ का पागल

लोगों का विश्वास है कि सैकड़ों वर्ष पहले केरल में एक व्यक्ति रहता था जिसे 'नारानथ का पागल' कहा जाता था।

एक बार उस ने अपने जन्मदिन पर लोगों को दावत देने की सोची। उस ने बहुत से लोगों को निमन्त्रित किया और दावत के लिए बहुत सारे चावल, सब्जी तथा दूसरी चीज़ें खरीदीं। इतना सारा भोजन पकाने के लिए उसने बहुत सारे रसोइये भी नियुक्त कर लिये।

लेकिन उस को पता चला कि इतने लोगों का भोजन पकाने के लिए उस के पास बड़े बड़े बर्तन नहीं हैं। वह सब पड़ोसियों के यहाँ गया और जो बर्तन वे दे सकते थे, माँग लाया।

kissekahani.com

बड़ी कठिनाई से वह उतने बर्तन इकट्ठे कर पाया जितने की उसे आवश्यकता थी। आखिरकार खाना पक गया और परोस भी दिया गया। दावत बड़ी शानदार थी और उस के मेहमान बहुत प्रसन्न थे।

दावत समाप्त होने के पश्चात् काफी दिन गुज़र गये लेकिन पागल आदमी ने लोगों से उधार लिए हुए बर्तनों को लौटाने का नाम न लिया। कुछ पड़ोसी उस के घर गये और उन्होंने अपने बर्तन वापिस माँगे। उस ने सब को विश्वास दिलाया कि सारे बर्तन सुरक्षित हैं। अब वह और अधिक देर किये बिना सब बर्तन लौटा देगा।

दो दिन बाद उस ने बर्तन लौटाने आरम्भ कर दिये। प्रत्येक बड़े बर्तन के साथ उसने बिलकुल वैसा ही एक छोटा बर्तन भी लौटाया। सब ने उस से पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा है।

"मैं ने ये सब बर्तन अपने तह-खाने में रख दिये थे," उस ने सफाई दी—"और उस तहखाने में कोई जादुई शक्ति है कि जो भी चीज वहां रखी जाती है वह जीवित हो उठती है। एक दिन जब मैं तहखाने में गया तो देखा सब बर्तन नाच और गा रहे थे। मैंने उन के आनन्द में बाधा नहीं डालनी चाही और दरवाजा बन्द कर के उन्हें वैसे ही छोड़ दिया। यही कारण था जिस से बर्तन लौटाने में इतनी देर हो गई।

" अन्त में मैं जब उन्हें तहखाने से लाने के लिये गया तो देखा कि प्रत्येक बर्तन के साथ उस का बच्चा भी है। क्यों कि बर्तन मेरे नहीं है इस लिए उनके बच्चे भी मेरे कैसे हो सकते हैं। मैं तुम्हें जो लौटा रहा हूँ वह वास्तव में तुम्हारा ही है।"

पागल के सब मित्र एक-एक बर्तन अधिक पाकर बहुत प्रसन्न हो उठे।

कई महीने बीत गये। नारानथ के पागल ने अपने पिता का श्राद्ध करने का निश्चय किया। वह इस समय भी खूब बड़ी दावत देना चाहता था। इस लिए उस ने भोज के लिए एक हजार लोगों को निमन्त्रित किया।

इस बार उसे पिछली बार से भी अधिक बर्तनों की आवश्यकता थी। उस ने फिर बर्तन उधार लिये।

लोगों ने इस बार उसे बड़ी खुशी से जितने बर्तन उन के पास थे सभी उधार दे दिये। यहाँ तक कि वे स्वयं बर्तनों को उठा कर उसके घर छोड़ आये।

अन्त में उस के पास उस की आवश्यकता से कहीं अधिक बर्तन इकट्ठे हो गये लेकिन फिर भी जो आदमी बर्तन लाया उस ने उन्हें बड़ी कृतज्ञता जताते हुए रख लिया।

ज्यों ही दावत समाप्त हुई पागल ने चुपचाप दो नाव किराये पर लीं और सारे बर्तन उन में भरकर शहर ले गया। उस ने सब बर्तन अच्छे दामों पर बेच दिये और घर लौटकर आनन्द से रहने लगा।

काफी दिन बीत गये। जिन लोगों ने बर्तन उधार दिये थे वे अपने बर्तन माँगने लगे। "तुम्हारे बर्तन वापिस करूँ ?" उस ने पूछा—"लेकिन मेरे विचार से तो वे मेरे पास हैं ही नहीं।"

"तुम यह कहने की हिम्मत कैसे कर सकते हो ?" वे गुस्से से बोले—"हम ने तुम्हें दावत के लिए अपने सारे बर्तन उधार दिये थे और अब तुम इन्कार करते हो।"

" कृपा करो और चिल्लाओ मत," वह बोला—" मुझे परेशान मत करो। मैंने यह तो नहीं कहा कि मैंने तुम्हारे बर्तन उधार लिये ही नहीं लेकिन बात यह है कि मैंने उन्हें तहखाने में रखा था और अब वे वहाँ नहीं हैं।"

" तब वे कहाँ हैं ?" लोगों ने गुस्से से पूछा।

" मुझे पता नहीं है," पागल ने उत्तर दिया।

लोगों को जब विश्वास हो गया कि पागल उन के बर्तन वापिस नहीं करना चाहता तो उन्हों ने उस पर कचहरी में नालिश कर दी।

नारानथ का पागल कचहरी में न्यायाधीश के सामने पेश हुआ।

" तुम पर लोगों को धोखा देने का आरोप लगाया गया है," न्यायाधीश बोला—" मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि इन सब के बर्तन लौटा दो।"

" श्रीमान जी," पागल ने उत्तर दिया—" इसमें मेरा दोष नहीं है।

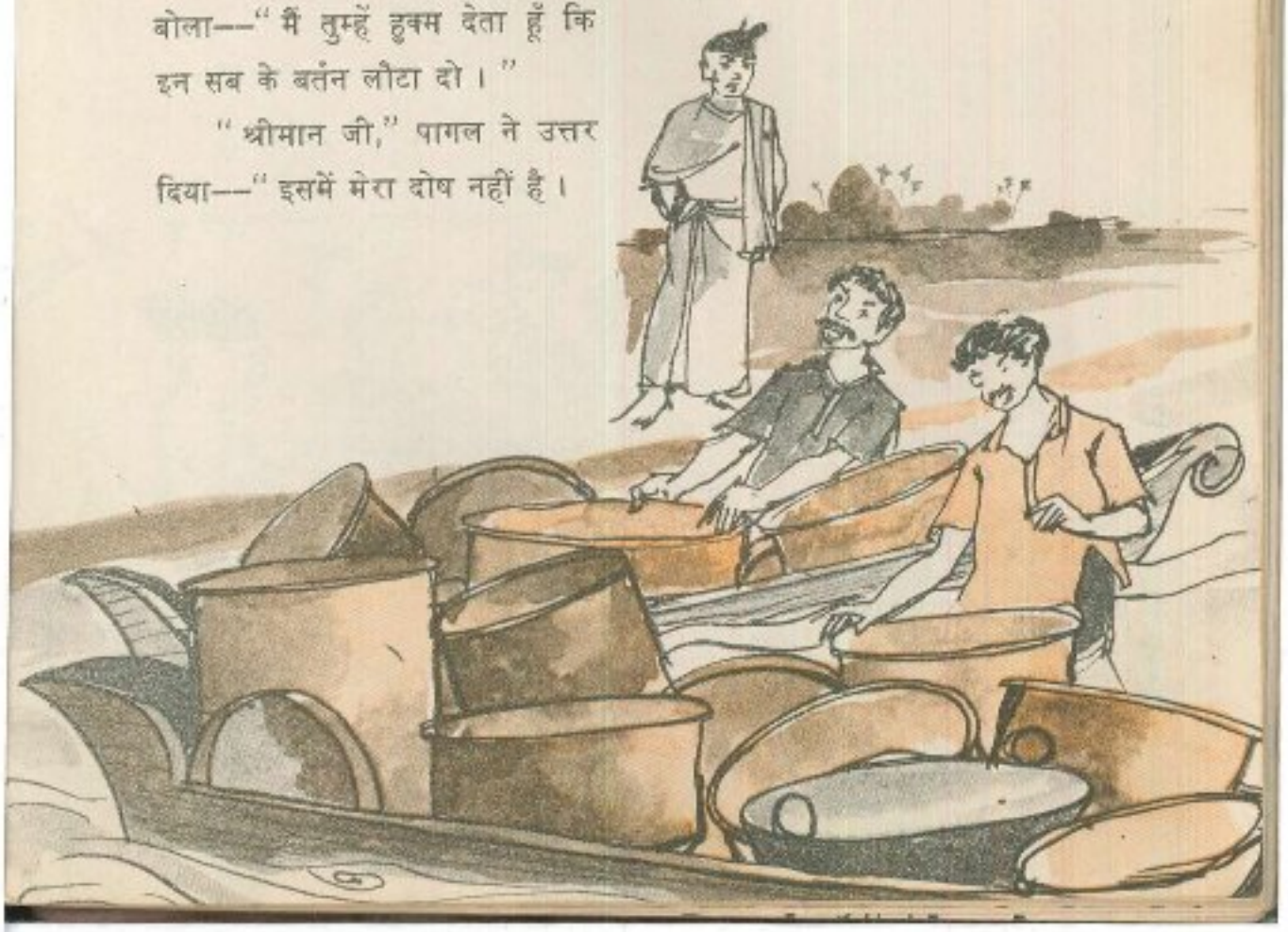

मेरे तहखाने में जादुई शक्ति है। जो चीज वहाँ रखो वही जीवित हो उठती है। एक बार बहुत से बर्तन मैं ने वहाँ रखे तो उन के बच्चे पैदा हो गये। जब मैं ने लोगों को बर्तन वापिस किये तो प्रत्येक ने माँ-बर्तन के साथ बच्चा-बर्तन भी स्वीकार किया। प्रत्येक को पूरा विश्वास था कि दोनों बर्तन उसी के हैं।"

"अच्छा ?" न्यायाधीश ने आश्चर्य से पूछा।

"श्रीमान जी, दूसरी बार वहाँ जब मैं ने बर्तन रखे तो एक दुर्घटना हो गई। मैंने देखा कि सब बर्तनों की मृत्यु हो गई है। उन में से एक भी नहीं बचा। यदि आप जन्म मानते हैं तो आप को मृत्यु भी माननी पड़ेगी।"

न्यायाधीश को पागल का तर्क समझ में आ गया और उसने मुकदमा खारिज कर दिया।

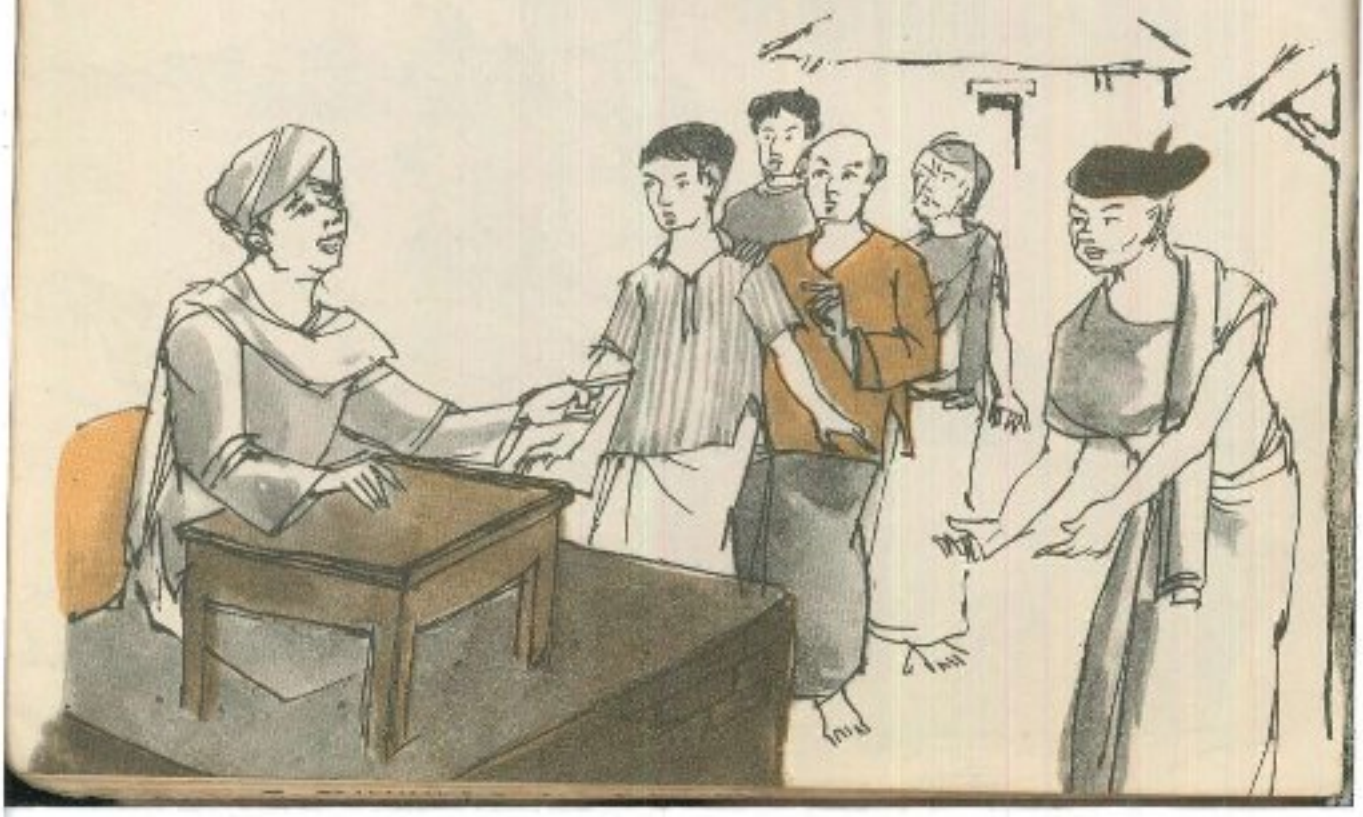

kissekahani.com

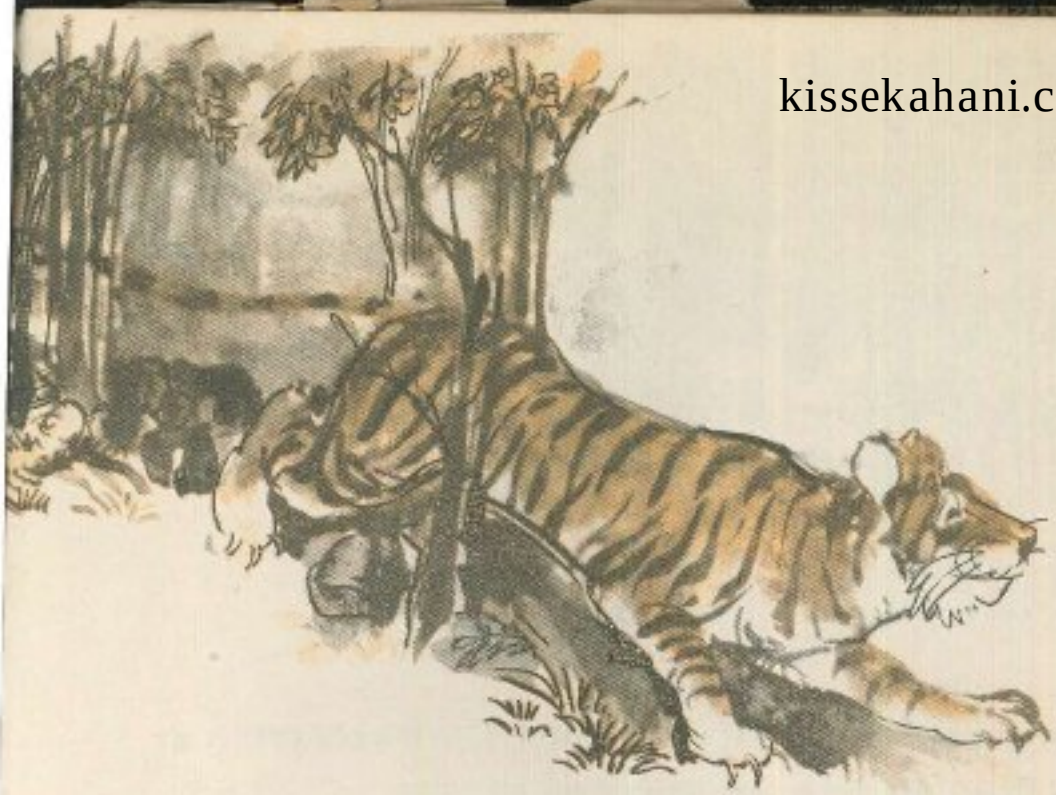

ब्राह्मण और बाघ

एक समय एक बाघ जंगल में रहता था। एक बार सारे समय उसे खाने को कुछ नहीं मिला। किसी जानवर की तलाश में वह सारा दिन इधर उधर घूमता रहा।

अन्त में कुछ दूरी पर उसे एक बकरी दिखाई दी। वह दबे पाँव बकरी की ओर बढ़ा। उस ने नज़दीक पहुँच कर देखा कि बकरी बाड़े के भीतर है।

बाघ बाड़े के चारों ओर घूमा तो उसे एक दरवाज़ा मिल गया। दरवाज़ा

kissekahani.com

खुला था। वह भीतर घुस गया। एक ही छलाँग में उस ने बकरी को गिरा कर मार दिया। फिर पेट भर कर भोजन किया।

बाघ अब प्रसन्न था और लौटना चाहता था लेकिन उस ने दरवाज़े पर पहुँच कर देखा कि वह बन्द है।

उस ने दरवाज़ा खोलने का भरसक प्रयत्न किया लेकिन सब बेकार। दरवाज़ा बन्द था और किसी तरह से भी खुल नहीं रहा था।

तब बाघ ने देखा कि वह एक बहुत बड़े पिंजरे में बन्द है। उसने छूटने के लिए बहुत हाथ-पैर मारे लेकिन पिंजरा बहुत अधिक मजबूत था। वह थक कर जमीन पर लेट गया। अब उसे ऐसा लग रहा था कि उस की जान खतरे में है।

इसी समय उस ने जंगल में एक ब्राहमण को आते देखा। वह पिंजरे की ओर ही आ रहा था। बाघ ने एक योजना बनाई जिस से वह पिंजरे से मुक्त हो सकता था। वह इस तरह आँखें बन्द कर के बैठ गया जैसे प्रार्थना कर रहा हो।

ब्राह्मण ने नजदीक आने पर बाघ को देखा तो डर के मारे जान निकल गई। लेकिन फिर उसने देखा कि बाघ पिंजरे में बन्द है तो उसने शान्ति की साँस ली। वह खड़ा होकर बाघ को देखने लगा।

" यह बाघ क्या कर रहा है ?" उसने स्वयं से ही प्रश्न किया—" ऐसा लगता है जैसे वह प्रार्थना कर रहा हो। कितनी विचित्र बात है ? क्या जानवर भी ईश्वर की उपासना कर सकते हैं ?"

कुछ क्षण बीत गये। बाघ ने आँखें खोल कर ब्राह्मण की ओर देखा तथा मुस्कराया। ब्राह्मण वहाँ से भागने लगा।

" ब्राह्मण महाराज, भागिए मत," बाघ बोला—" ईश्वर ने मेरे द्वारा तुम्हारे लिए एक सन्देश भेजा है।"

" ईश्वर का सन्देश ?" ब्राह्मण ने सोचा—" मेरे लिए ? हो सकता है, सच हो। पिछले चालीस वर्षों से मैं प्रार्थना कर रहा हूँ। शायद अब ईश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली है।"

ब्राह्मण बाघ के नज़दीक चला गया।

" क्या सन्देश है ? " उस ने बड़ी विनम्रता से पूछा।

" मैं ने अभी-अभी ईश्वर को सपने में देखा है," बाघ ने उत्तर दिया—" मुझे ईश्वर ने कहा है : 'एक ब्राह्मण महात्मा तुम्हारे पास आयेंगे। मेहरबानी कर के उसे यह सन्देश दे देना।'

" तब ईश्वर ने तुम्हारे लिए मुझे सन्देश दिया। "

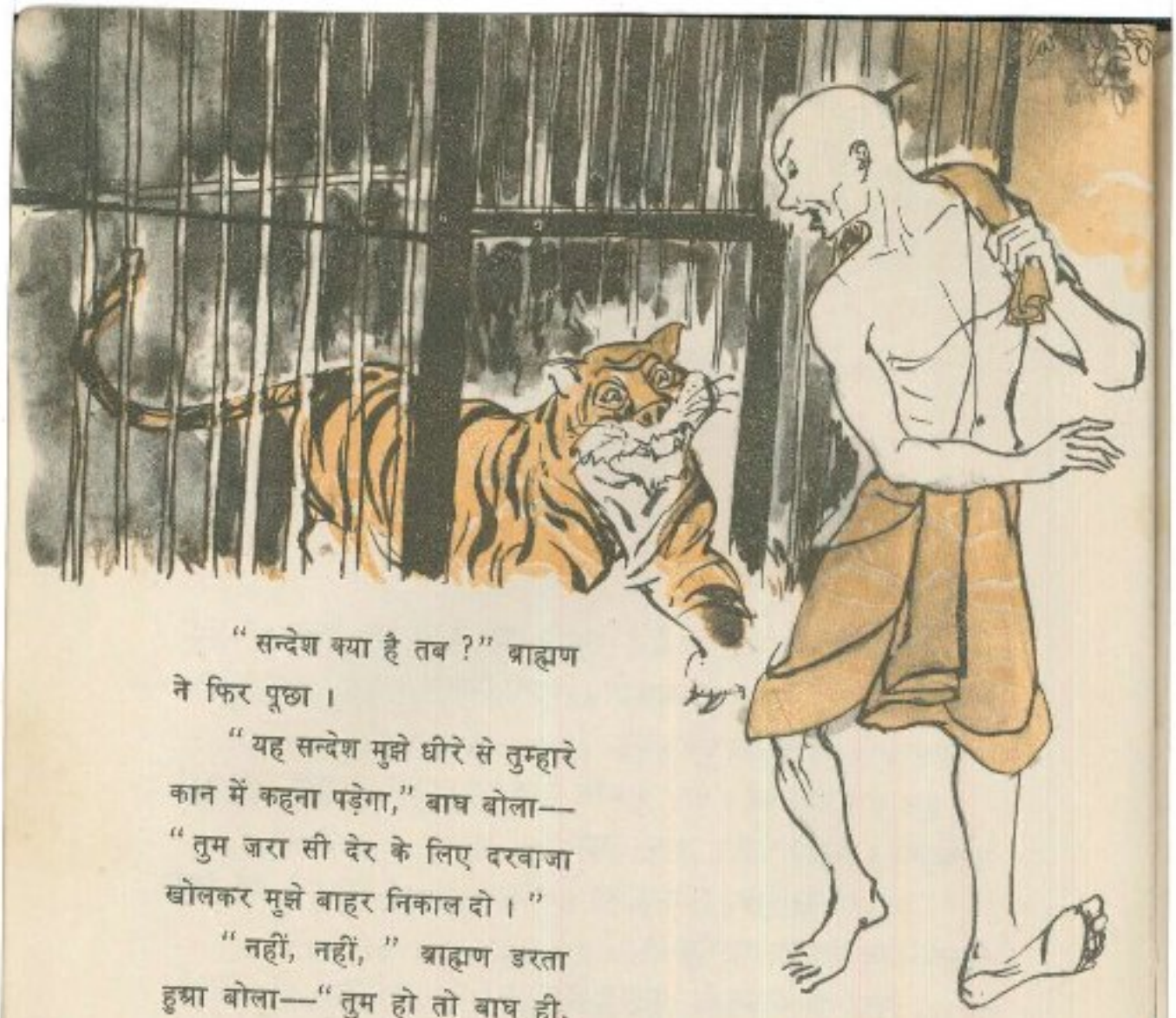

"सन्देश क्या है तब ?" ब्राह्मण ने फिर पूछा ।

"यह सन्देश मुझे धीरे से तुम्हारे कान में कहना पड़ेगा," बाघ बोला—"तुम ज़रा सी देर के लिए दरवाजा खोलकर मुझे बाहर निकाल दो ।"

"नहीं, नहीं," ब्राह्मण डरता हुआ बोला—"तुम हो तो बाघ ही, मुझे मार दोगे ।"

"तब दरवाजा मत खोलो," बाघ बोला—"बस तुम्हें सन्देश भी नहीं मिलेगा । अब यहाँ से चले जाओ और मुझे मेरी प्रार्थना करने दो ।"

"गुस्सा मत होओ, "ब्राह्मण बोला—"मैं तो वही कह रहा था जिसका मुझे डर है । लेकिन यदि ईश्वर मुझ से कुछ करवाना चाहता है तो मैं प्रसन्नता से करूँगा ।" "तब, अपना और मेरा दोनों का समय खराब मत करो । जल्दी से दरवाजा खोलो," बाघ बोला ।

ब्राह्मण ने पिंजरे का दरवाजा खोल दिया और बाघ बाहर आ गया। वह ब्राह्मण को देख कर मुस्कराया।

"तुम से ईश्वर प्रसन्न है," वह बोला—"और मुझ से भी ईश्वर प्रसन्न है। उस ने मुझे तुम्हें यह सन्देश देने के लिए कहा है :

'मेरे भक्त, बाघ को कुछ खाने के लिए दो।"

"खाना ? तुम्हारे लिए ?" ब्राह्मण ने पूछा—"मैंने तो स्वयं दो दिन से कुछ नहीं खाया है और मेरा परिवार भूख से मर रहा है। मैं तो जंगल में से निकल कर दूसरे गाँव में खाना माँगने के लिए ही जा रहा हूँ।"

"लेकिन ईश्वर जानता है कि मुझे देने के लिए तुम्हारे पास भोजन है," बाघ बोला।

"कहाँ ? कैसे ?" ब्राह्मण ने पूछा।

"बाघ के लिए तो तुम्हारा शरीर ही भोजन है, क्यों है न ?" बाघ ने उत्तर दिया—"यह शरीर जल्दी से मुझे अर्पित कर दो नहीं तो मुझे जबर्दस्ती करनी पड़ेगी। मुझे ईश्वर ने यही करने के लिए कहा था।"

"तुम तो मुझे मारना चाहते हो ?" ब्राह्मण चिल्ला उठा।

"यह फैसला करना मेरा काम नहीं कि तुम मरो या नहीं," बाघ बोला—"मैं तो केवल तुम्हारा माँस खाना चाहता हूँ।"

"नहीं, ऐसा मत करो," ब्राह्मण भय से चिल्लाया—"मुझ पर दया करो। मेरे छः बच्चे है और वे भूखों मर रहे हैं। यदि मैं मर गया तो उन सब की भी मृत्यु हो जाएगी। कृपा कर के मुझे जाने दो। मैं तुम्हारी लम्बी आयु के लिए प्रार्थना करूँगा।"

"अरे, नहीं," बाघ बोला—"तुम मुझे ऐसे ही छोड़कर नहीं जा सकते। यह तो ईश्वर की ही इच्छा है कि मैं तुम्हें खाऊँ।"

kissekahani.com

"मुझे मत मारो, मुझे मत मारो," ब्राह्मण ने मिन्नत की। मैं दूसरे गाँव जाकर तुम्हारे लिए ढेर सारा खाना ले आऊँगा। मैं तुम से वायदा करता हूँ।"

"मुझे तुम पर विश्वास है, लेकिन मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता," बाघ ने उत्तर दिया—"मैं तुम्हें अभी खाना चाहता हूँ, इसके अलावा" वह कहता गया—"आदमी पर दया नहीं करनी चाहिए। वह बड़ा दुष्ट होता है। देखो यह पिंजरा आदमी ने मुझे पकड़ने और मारने के लिए ही बनाया है।"

शेर ब्राह्मण पर झपटने को तैयार था। लेकिन ब्राह्मण चिल्लाया कि यदि उसकी जान बख्श दी जाये तो वह बाघ के लिए सब कुछ करने को तैयार है।

"आदमी को मरना ही चाहिए," बाघ फिर बोला—"आदमी को मार ही देना चाहिए। लेकिन फिर भी तुम्हारे मामले में मैं तुम्हें अवसर दूँगा। हम तीन पंचों के पास चलेंगे। यदि उनमें से एक भी तुम्हारी सहायता के लिए तैयार हो जायेगा तो मैं इस मामले पर फिर से गौर करूँगा।"

ब्राह्मण को इस बात से सहमत हो जाना पड़ा। वे तीन पंचों की खोज में चल पड़े। पहले उन्हें एक वृद्ध गधा मिला। उन्होंने अपना मामला उसे बताया। गधे ने सारी बात सुनी और अपना निर्णय दे दिया।

"मेरी ओर देखो," वह बोला—"आदमी ने मेरा क्या हाल कर दिया है। मैंने सारा जीवन उसकी गुलामी करते हुए बिताया है। अब मैं बहुत बूढ़ा

kissekahani.com

हो गया हूँ और खड़ा भी नहीं हो सकता। किसी काम करने के योग्य नहीं रह गया तो उसने मुझे घर से निकाल दिया है। आदमी बहुत क्रूर होता है, उसे मरना ही चाहिए।"

बाघ ने गधे को धन्यवाद किया और ब्राह्मण की ओर देखकर मुस्कराया।

"चलो, अब दूसरे पंच की तलाश करें," वह बोला।

रास्ते में उन्हें एक बहुत बड़ा मगरमच्छ मिला। ब्राह्मण ने उसे सारा मामला बताया और उससे दया और न्याय की भीख माँगी।

"मैं कुछ और नहीं सुनना चाहता," मगरमच्छ बोला—"मुझे अच्छी तरह से पता है कि मामला क्या है। तुम्हें पता नहीं, मेरी पत्नी के साथ क्या किया गया है? एक आदमी ने उसे गोली से मार दिया, इसलिए कि वह उसकी खाल से अपनी पत्नी के लिए बैग बनवा सके। आदमी के जीवित रहते कोई भी जानवर सुरक्षित नहीं है। इसलिए उसे मरना ही चाहिए," मगर ने बिना यह सुने कि बाघ क्या कहना चाहता है अपना निर्णय दे दिया था।

"आओ, अब तीसरे पंच की तलाश करें," बाघ बहुत प्रसन्न होता हुआ बोला। ब्राह्मण काँपता और डगमगाता हुआ बाघ के पीछे चला। उन्हें काफी रास्ता तय करने के पश्चात् तीसरा पंच मिला। यह एक लोमड़ी थी।

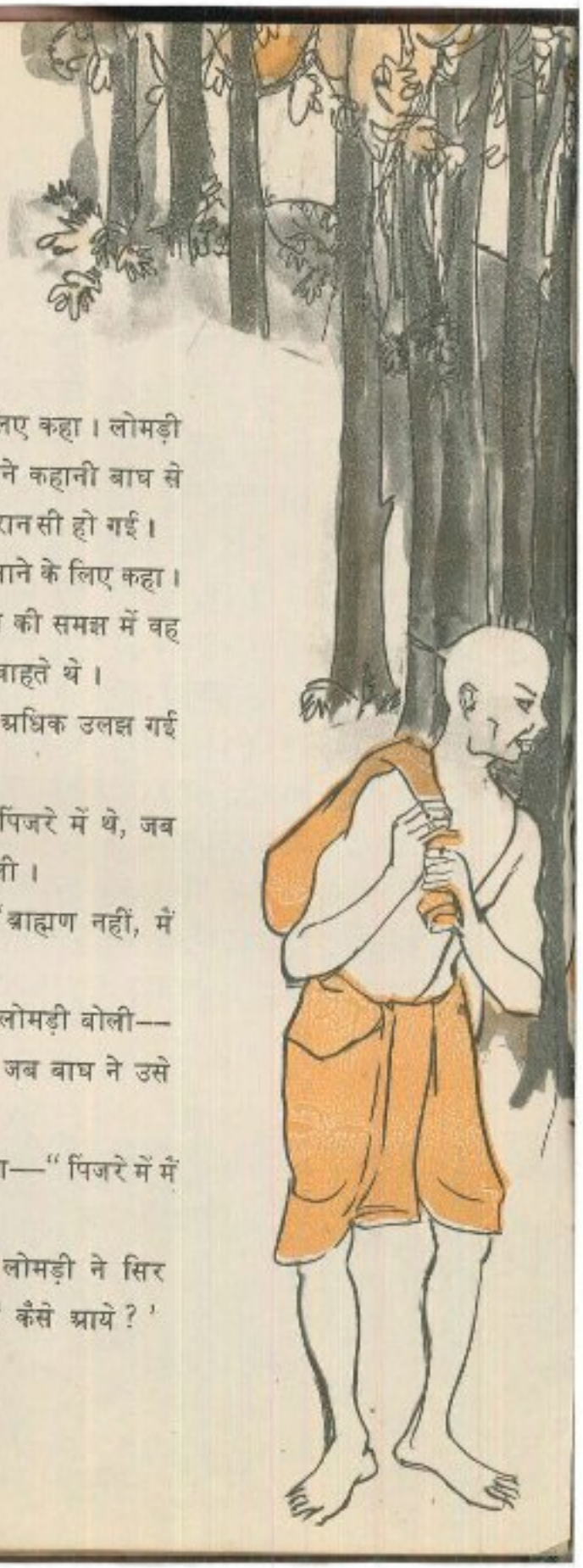

उन्होंने उसे अपना मामला सुनने के लिए कहा। लोमड़ी ने उनकी पूरी कहानी सुनी। पहले उसने कहानी बाघ से सुनी और फिर ब्राह्मण से। वह कुछ हैरान सी हो गई।

उसने उन्हें मामले को फिर समझाने के लिए कहा। उन्होंने वैसा ही किया लेकिन लोमड़ी की समझ में वह सब कुछ नहीं आया जो वे बताना चाहते थे।

लगता था कि लोमड़ी और भी अधिक उलझ गई है तथा परेशान हो गई है।

"अच्छा, तो ब्राह्मण महाराज पिंजरे में थे, जब बाघ आया। ठीक है न?" वह बोली।

"नहीं, नहीं," बाघ बोला—"ब्राह्मण नहीं, मैं पिंजरे में था।"

"अच्छा, अब समझ में आया," लोमड़ी बोली—"ब्राह्मण प्रार्थना कर रहा था, है न, जब बाघ ने उसे देखा?"

"बिलकुल गलत," बाघ चिल्लाया—"पिंजरे में मैं था और प्रार्थना कर रहा था।"

"तुम पिंजरे के भीतर थे?" लोमड़ी ने सिर खुजलाते हुए पूछा—"तब तुम यहाँ कैसे आये?'

"तुम बिलकुल मूर्ख हो," बाघ चिल्लाया—"तुम्हारी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा। हमने जो कुछ कहा उससे दो पंच तो सब बात समझ गये। उन्होंने युक्तिसंगत निर्णय भी दे दिये। लेकिन एक तुम हो कि तुम्हारी समझ में ही कुछ नहीं आ रहा है।"

"वास्तव में स्थिति क्या थी, यह समझना ज़रा कठिन है," लोमड़ी बोली। —"जब तक वह स्थान मैं स्वयं न देखूं। चलो हम सब वहाँ चलें जहाँ कि घटना घटी थी।"

"अच्छा, आओ," बाघ बोला—"चलो, चलें।" ब्राह्मण, बाघ और लोमड़ी इकट्ठे पिंजरे की ओर चल पड़े।

"अब, मुझे देखने दो," लोमड़ी बोली—"ब्राह्मण महाराज, आप पिंजरे में घुसिये और वैसे ही बैठिये जैसे आप बैठे थे और बाघ को यहीं प्रार्थना करने दो।"

"तुम तो महामूर्ख हो," बाघ बोला—"पिंजरे में बैठा मैं भजन कर रहा था और ब्राह्मण जंगल की ओर से आ रहा था।"

"यह कैसे हो सकता है?" लोमड़ी बोली।

"मैं तुम्हें दिखाता हूँ," बाघ ने यह कहा और पिंजरे में घुस गया।

"अब," लोमड़ी बोली—"ब्राह्मण महाराज पिंजरे का दरवाजा भी बन्द कर दो। तब मुझे दिखाओ कि तुमने दरवाजा कैसे खोला था।"

काँपते हुए ब्राह्मण ने पिंजरे के पास जाकर दरवाजा बन्द कर के ताला लगा दिया।

"क्या तुम अब देखना चाहती हो कि मैं ने दरवाजा कैसे खोला था?" उसने पूछा।

"ओ बुद्धू!" लोमड़ी ने कहा—"मैंने तुमसे बड़ा मूर्ख अभी तक कहीं नहीं देखा। भागो, और अपना रास्ता पकड़ो, जैसे कि कभी कुछ भी हुआ न हो।"

फिर लोमड़ी बाघ की ओर मुड़कर बोली: "अलविदा, प्रिय बाघ,—आप बड़े मजे से अब अपनी प्रार्थना में मग्न रह सकते हो।"

kissekahani.com

भाग्य

बहुत समय हुआ एक वृद्ध जुलाहा था, जो शिवजी का बड़ा भक्त था। उसे ईश्वर से यह प्रार्थना करते पच्चीस वर्ष हो गये थे कि उसे आराम और सुख से रहने के लिए काफी धन मिल जाय।

वह बड़ी कर्त्तव्य भावना से प्रति दिन सुबह-शाम शिव-मन्दिर जाता। वहाँ वह चुपचाप प्रार्थना करता। फिर मन्दिर की सौ परिक्रमा करता। इसके बाद मूर्ति के आगे दण्डवत् प्रणाम करता और घर लौटता।

हालाँकि जुलाहा ऐसा पिछले पच्चीस वर्ष से कर रहा था लेकिन उसके धनी होने के कोई चिह्न अभी भी दिखाई नहीं दे रहे थे। परन्तु उसका ईश्वर पर विश्वास फिर भी अटल था। उसे पूरा भरोसा था कि शिवजी उसे अवश्य एक दिन धनी बना देंगे। बड़े धैर्य से वह उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था।

बेचारा जुलाहा बूढ़ा होता जा रहा था। उसका स्वास्थ्य भी अधिक अच्छा न था। दिन में दो बार मन्दिर की एक सौ परिक्रमा करना उसे काफी थका

kissekahani.com

देता था। यहाँ तक कि उसे चलने के लिए छड़ी की सहायता लेनी पड़ती थी।

स्वर्ग में बैठे शिवजी ने जुलाहे की पुकार सुन कर भी उसकी सहायता के लिए कुछ न किया। लेकिन उनकी पत्नी पार्वतीजी को गरीब जुलाहे पर बड़ी दया आई। एक दिन उन्होंने देखा कि मन्दिर की परिक्रमा करते करते वह गिरने वाला ही था। उन्होंने सोचा कि इस गरीब जुलाहे के बारे में उन्हें अपने पति से बात करनी चाहिए।

"प्रभु," पार्वती शिवजी से बोलीं—"आप अपने भक्त वृद्ध जुलाहे के साथ इतनी सख्ती क्यों कर रहे हैं? वह इतने समय से आपकी आराधना कर रहा है।" "क्यों?" शिवजी ने पूछा—"आप ऐसा क्यों सोचती हैं कि मैं उससे सख्ती कर रहा हूँ?"

"उसकी ओर देखो," पार्वती ने उत्तर दिया—"वह पिछले पच्चीस वर्ष से तुम्हारे आशीर्वाद के लिए प्रार्थना कर रहा है। आपने उसके लिए क्या किया है? अब वह वृद्ध हो गया है और अच्छी तरह से चल भी नहीं सकता। तुम उसका बाकी जीवन कुछ आसान क्यों नहीं कर देते?"

शिवजी पार्वती की ओर देखकर मुस्कराये।

"क्या तुम मुझे पत्थर दिल समझती हो?" वह बोले—"सोचो, यदि वह धन का उपयोग कर सकता तो मैं उसे धन देने से इन्कार करता?"

"धन का उपयोग वह क्यों नहीं कर सकता?" उन्होंने पूछा—"मैं आपकी बात नहीं समझी।"

"उसके भाग्य में धन है ही नहीं," शिवजी बोले।

"भाग्य? यह सब फिजूल बातें हैं," पार्वती ने उत्तर दिया—"भला यदि आदमी के पास धन हो तो वह उसका उपयोग क्यों नहीं कर सकता, मैं यह सब नहीं मानती।"

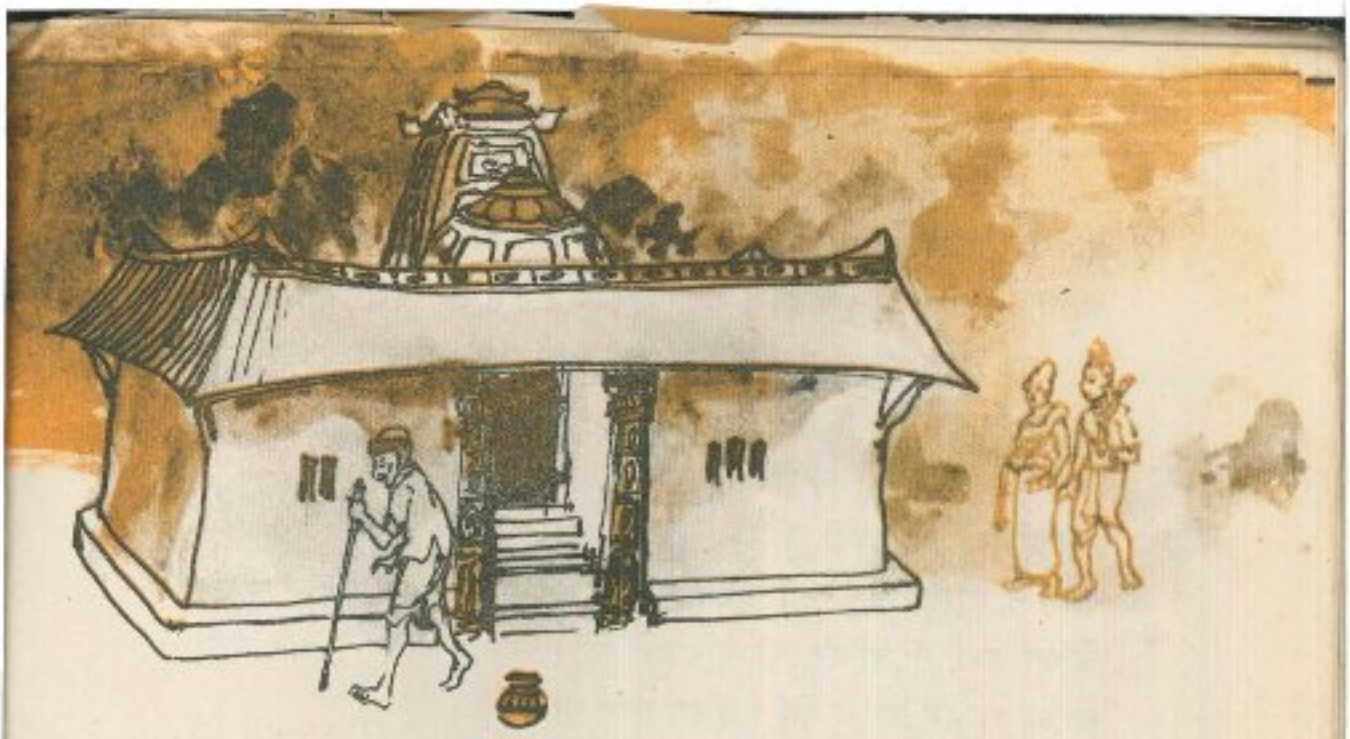

"अच्छा," शिवजी बोले—"वृद्ध जुलाहे को मैं सोने से भरा हुआ बर्तन दूँगा। फिर देखते हैं कि उसे लेकर वह उसका ठीक उपयोग करता है या नहीं। आओ मेरे साथ, चलो उस मन्दिर में चले जहाँ वह पूजा करने आता है।"

भगवान शिव और पार्वती पृथ्वी पर आ गये और उस मन्दिर में जा पहुँचे।

"देखो," शिवजी बोले—"वह आँगन में अकेला है और मन्दिर की परिक्रमा कर रहा है। यह सोने से भरा बर्तन मैं उसके आगे रख देता हूँ कि उसे आसानी से मिल जाये।"

सोने से भरा हुआ बर्तन भगवान शिव ने जुलाहे के रास्ते में ऐसे रख दिया कि वह उसे अवश्य ही दिख जाये। थोड़ी दूरी पर शिवजी और पार्वती देखने लगे।

वृद्ध जुलाहा चलता गया। "भगवान शिव," उसने प्रार्थना की—"मुझे कितनी देर और यह दुखी जीवन भुगतना पड़ेगा? इतने लम्बे समय से मैं तुम्हारी भक्ति कर रहा हूँ परन्तु तुमने मेरी सहायता नहीं की। फिर भी तुम्हारी

दया के लिए मैं कृतज्ञ हूँ कि अपना काम तो कर सकता हूँ। मैं कितना भाग्य-शाली हूँ कि इस वृद्ध अवस्था में भी आँखें ठीक होने से खूब अच्छा बुन लेता हूँ।"

तब उसके मन में एक बड़ी डरावनी बात आई। विचार इतना भयानक था कि वह एक क्षण के लिए मूर्तिवत खड़ा रह गया।

"यदि कहीं मेरी आँखों की ज्योति चली जाये तो," उसने सोचा--"मेरा क्या होगा? मैं अपनी जीविका कैसे कमाऊँगा? मन्दिर कैसे आऊँगा? मैं कपड़े न भी बुन सकूँ--लेकिन मन्दिर में प्रार्थना करने तो अवश्य आऊँगा। लेकिन क्या मैं मन्दिर की परिक्रमा कर सकूँगा? शायद मैं कर सकूँगा। अच्छा कोशिश कर के देखूँ। मैं इस तरह चल लूँगा।"

जुलाहे ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और चलता रहा।

वह आँखें बन्द कर के ही चलता गया और सोने के भरे हुए बर्तन के पास से गुजर गया। उसने जब आँखें खोलीं तो मुस्कराया। "हाँ," वह बोला--"मुझे चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। यदि मैं अन्धा भी होऊँ तो भी मन्दिर की परिक्रमा तो कर ही सकता हूँ।"

इस प्रकार जुलाहे ने सोने से भरा बर्तन न देखा और वह घर चला गया।

शिवजी ने पार्वती की ओर देखा। "अब बताओ, मैंने कहा नहीं था," वह बोले--"कि जुलाहे के भाग्य में धनी होना नहीं लिखा है।"

"आप क्या उसकी किसी तरह सहायता नहीं कर सकते?" पार्वती जी ने पूछा।

"हाँ, मैं उसके लिए यह कर सकता हूँ," शिवजी ने उत्तर दिया--"अब उसका धन का आकर्षण और उसमें दिलचस्पी समाप्त हो जायेगी और वह आनन्द से रहेगा।"

शिवजी और पार्वती सोने से भरा बर्तन लेकर घर लौट गये।

जादू की चारपाई

एक घर में सात भाई इकट्ठे रहते थे। छः भाई तो खूब मेहनत से काम करने वाले थे लेकिन सब से छोटा बड़ा आलसी था। उसके भाई उससे ज़रा भी खुश न थे। उन्होंने बहुत बार उसे कुछ काम करने की सलाह दी लेकिन उसने एक न सुनी। वह बस खाता, सोता और आवारागर्दी करता।

एक दिन सबसे बड़े भाई को अपने छोटे आलसी भाई पर बड़ा गुस्सा आया। उसने अपनी पत्नी से कहा कि जब छोटा भाई सन्ध्या समय घर आये तो उसे खाना न देना। जब सबसे छोटा भाई शाम को घर आया और उसने भोजन माँगा तो उसकी भाभी बोली कि उसके लिए भोजन नहीं है। यह बात सुन कर वह गुस्से से लालपीला हो गया। ऐसा व्यवहार उसके साथ पहले कभी नहीं हुआ था। उसने निश्चय किया कि वह अब उस घर में नहीं रहेगा।

दूसरे दिन सुबह ही उसने घर छोड़ दिया और अपना भाग्य आजमाने निकल पड़ा। जो पहली सड़क उसे दिखाई दी उसी पर चलता चला गया।

वह चलता गया, चलता गया और अन्त में इतना थक गया कि उसे अब एक कदम भी चलना भारी हो गया। तब उसे एक बड़ा सा गाँव मिला। गाँव में वह इधर उधर काम की खोज में घूमने लगा।

kissekahani.com

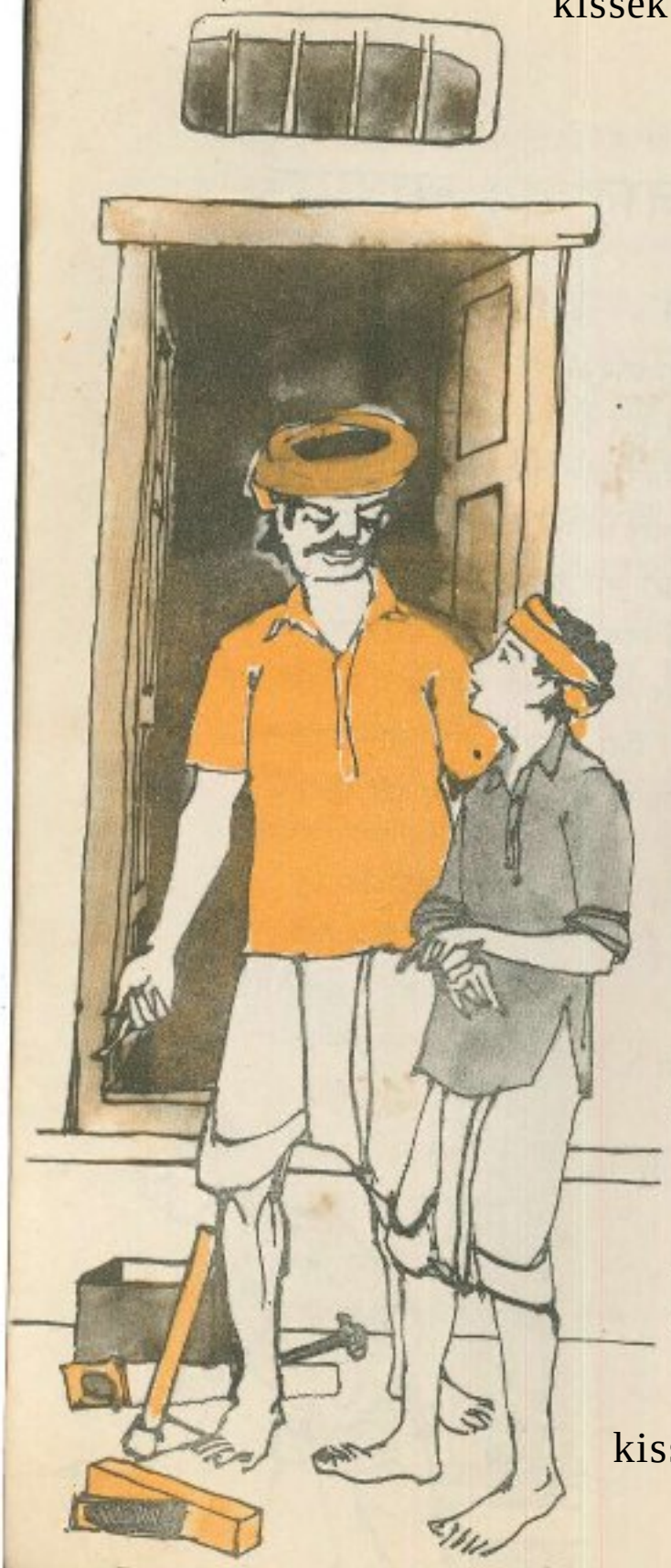

उसे एक बढ़ई मिला जो उसे अपने घर ले गया । उसने उसे भोजन खिलाया और रात को सोने का स्थान भी दिया ।

बढ़ई ने दूसरे दिन नवयुवक से अपने काम में सहायता करने के लिए कहा । नवयुवक इस बात पर सहमत हो गया । उसने काम में बहुत रुचि दिखाई और बढ़ई उसे सहायक के रूप में पाकर बहुत खुश हुआ ।]

दिन, सप्ताह में और सप्ताह महीनों में बदल गये, नवयुवक एक कुशल कारीगर बन गया । उसके काम से बढ़ई इतना प्रसन्न हुआ कि अपनी इकलौती पुत्री का विवाह उससे कर दिया । विवाह के पश्चात् नवयुवक फिर पुरानी आदतों पर आ गया । उसने काम करने से इन्कार कर दिया । वह खाता पीता और आनन्द से अपनी पत्नी के साथ रहता ।

बढ़ई बहुत बार उससे काम करने को कहता लेकिन वहाँ कौन सुनता था । महीनों गुजर गये । बढ़ई का क्रोध

kissekahani.com

बढ़ता गया। अन्त में उसने निश्चय किया कि बेटी और जवाई को अब और नहीं खिलाना है। उसने नवयुवक से कहा कि वह घर से निकल जाये, अपनी पत्नी को भी साथ ले जाये और अपना भाग्य कहीं दूसरे स्थान पर आजमाये।

बढ़ई इतना क्रोधित था कि उसने नवयुवक और उसकी पत्नी को घर से ऐसे निकाला जैसे धक्का देकर बाहर कर दिया हो। फिर भी जाते समय उसने औजारों की एक पेटी उन्हें दे दी। "यह रहा तुम्हारा दहेज," वह बोला—"यदि इन औजारों का प्रयोग करोगे तो अच्छी तरह से रह सकोगे।"

नवयुवक और उसकी पत्नी वहाँ से बहुत दूर चले गये और एक छोटे से घर में रहने लगे। आरम्भ में उनके पास थोड़े से पैसे थे लेकिन एक दो दिन बाद कुछ भी न बचा।

"अब," उसकी पत्नी बोली—"यदि तुम भूख से नहीं मरना चाहते हो तो जाकर कुछ काम करो।"

"मैं क्या काम करूँ?" उसने पूछा।

"जंगल में जाओ," वह बोली—"और कुछ लकड़ी काट कर ले आओ। उस लकड़ी से कुछ फर्नीचर बनाओ और उसे बाजार में बेचो।"

दूसरे दिन सुबह वह जंगल गया—वहाँ से कुछ लकड़ी काट कर घर ले आया। उसने बड़े परिश्रम से उस लकड़ी से कुछ फर्नीचर बनाया। अगले दिन उसने वह सब सामान बाजार में बेच दिया। उसकी पत्नी प्रसन्न थी। वह अब वे सब चीजें खरीद सकती थी जो उसे घर के लिए चाहिए थीं।

इस तरह उसका पति काम करता रहा—लकड़ी काट कर लाता, सामान बनाता और बाजार में बेच देता।

एक दिन वह अच्छी लकड़ी की खोज में जंगल में बहुत दूर निकल गया। वहाँ जब उसने दो आदमियों को बातें करते सुना तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने चारों ओर देखा लेकिन कोई दिखाई न दिया। वहाँ केवल दो बहुत ऊँचे ऊँचे पेड़ खड़े थे। उनमें से एक पेड़ को उसने काटा और उसकी लकड़ी को घर ले आया। उस लकड़ी से उसने एक अति सुन्दर पलंग बनाया। दूसरे दिन वह पलंग को बेचने के लिए बाज़ार ले गया।

उस देश का राजा वहाँ से गुज़र रहा था। उसने उस सुन्दर पलंग को खरीद लिया।

राजा नये पलंग पर सोना चाहता था। उसने नौकरों को आज्ञा दी कि उसका बिछौना नये पलंग पर लगायें।

खाने के पश्चात् राजा अपने सोने वाले कमरे में गया और नये पलंग पर लेट गया। कुछ समय बाद उसे ऐसा लगा कि कोई बातें कर रहा है। उसने देखा कि पलंग का एक पाया बाकी तीन पायों से बातें कर रहा था।

"मैं बाहर घूमने जा रहा हूँ," पाया बोला, "देखो, मेरे जाने पर तुम तीनों पलंग को ठीक से टिकाये रखना। मैं जल्दी ही लौट आऊँगा।"

तब राजा ने पाये को बाहर जाते हुए देखा। राजा इस घटना के बाद सो न सका। वह पाये के लौट आने की प्रतीक्षा करता रहा।

थोड़ी देर में पाया वापिस आ गया।

"तुम कहाँ गये थे? तुम क्या देखकर आये हो?" बाकी तीनों पायों ने प्रश्न किये।

"मैं राजा के रसोईघर में गया था," पाया बोला—"और जानते हो मैंने वहाँ क्या देखा? मैंने वहाँ बहुत सी दासियों को ढेर सारा खाने का सामान अपने घरों को भेजते हुए देखा।"

तब पलंग का दूसरा पाया बोला—"तुम तीनों पलंग को टिकाये रखना। मैं भी जरा घूम कर आता हूँ।"

और वह चला गया।

लेकिन वह भी जल्दी ही लौट आया और अपने स्थान पर जम गया।

"तुम कहाँ गये थे? और क्या देखा तुमने?" बाकी तीनों पायों ने बड़ी उत्सुकता से प्रश्न किया।

"मैं गया था शाही खजाने में," पाये ने उत्तर दिया—"और तुम सोच भी नहीं सकते जो मैंने वहाँ देखा? मैंने देखा कि राजा का भंडारी मजे से राजा के खजाने पर हाथ साफ कर रहा है। उसने धन से दो थैले भरे और उन्हें घर ले गया।"

"अब मेरी बारी है," तीसरा पाया बोला, "मैं जल्दी ही लौट आऊँगा। देखो, पलंग को ठीक से टिकाये रखना।"

फिर तीसरा पाया बाहर चला गया।

कुछ देर बाद तीसरा पाया लौट आया।

"तुम कहाँ गये थे और क्या देख कर आये हो?" बाकी तीनों पायों ने पूछा।

तीसरा पाया सीधा अपने स्थान पर चला गया।

"लज्जा की बात है!" वह चिल्लाया—"मैं क्या बताऊँ, मैंने जो देखा उसे बताने में लज्जा आती है।"

"हमें जल्दी से बताओ," बाकी तीनों पायों ने याचना की—"ऐसी लज्जाजनक क्या बात देखी तुमने?"

"मैं तुम्हें कैसे बताऊँ कि मैंने क्या देखा?" पाये ने उत्तर दिया—"मैं रानी के कमरे में गया और वहाँ मैंने राजा के मन्त्री को देखा। वह रानी के पास बैठा था और वे बातें कर रहे थे।"

"वे क्या कह रहे थे? क्या कह रहे थे?" बाकी तीन पायों ने बड़ी उत्सुकता से पूछा। तीसरा पाया बोला:

"'तुम राजा को मार दो,' मन्त्री ने रानी से कहा—'फिर हम आनन्द-पूर्वक इकट्ठे रह सकते हैं।'

"'नहीं, बाबा,' रानी बोली—'मैं ऐसा नहीं कर सकती।'

"मन्त्री यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ। उसने रानी के मुँह पर थप्पड़ मारा। उसकी अँगुलियों के लाल निशान अब भी रानी के गाल पर हैं।"

"कितना भयंकर है यह सब!" तीनों पाये अचरज करते हुए बोले।

राजा ने सब पायों की बातें बड़े ध्यान से सुनीं थीं। उन सब बातों से

kissekahani.com

उसे बड़ा आघात हुआ । उससे अब अधिक सहा नहीं गया । वह उठकर सीधा रानी के कमरे में गया ।

उसने रानी के मुँह पर लाल निशान देखा ।

"तुम्हारे गाल पर क्या हुआ है ?" उसने पूछा ।

रानी डर से चौंक उठी ।

"मेरा गाल ?" वह बोली—"अरे हाँ मे-रे-रे से खरोंच लग गई है ।"

राजा ने अपने सिपाहियों को बुलाया और मन्त्री, भंडारी और दासियों को बुलाने के लिए कहा । उसने मन्त्री और रानी को जेल में डलवा दिया और भंडारी और दासियों को भी सजा देने की आज्ञा दी ।

राजा अपने आपको उस आदमी का बड़ा कृतज्ञ मान रहा था जिसने उसे पलंग बेचा था । वह उसे पुरस्कार देना चाहता था लेकिन उसका पता ही नहीं लग रहा था । राजा ने डौंडी पिटवाई कि पलंग बनाने वाला उसके पास आये ।

नवयुवक ने डौंडी के बारे में सुना, लेकिन उसे डर था कि शायद पलंग में कुछ नुक्स रह गया है । वह डर के मारे छिप गया ।

अन्त में राजा के कुछ आदमियों को उसका पता चल गया और वे पकड़ कर उसे राजा के पास ले गये ।"तुमने इस अद्भुत पलंग को मुझे बेचकर मेरी जान बचाई है," राजा उससे बोला—"मैं तुम्हें इनाम देना चाहता हूँ । मैं तुम्हें बहुत सारी जमीन और एक घर दूँगा ।"

नवयुवक आश्चर्यचकित रह गया लेकिन वह इस भेंट के लिए कृतज्ञ था । वह और उसकी पत्नी बहुत वर्षों तक आनन्दपूर्वक उस घर में रहे ।

kissekahani.com

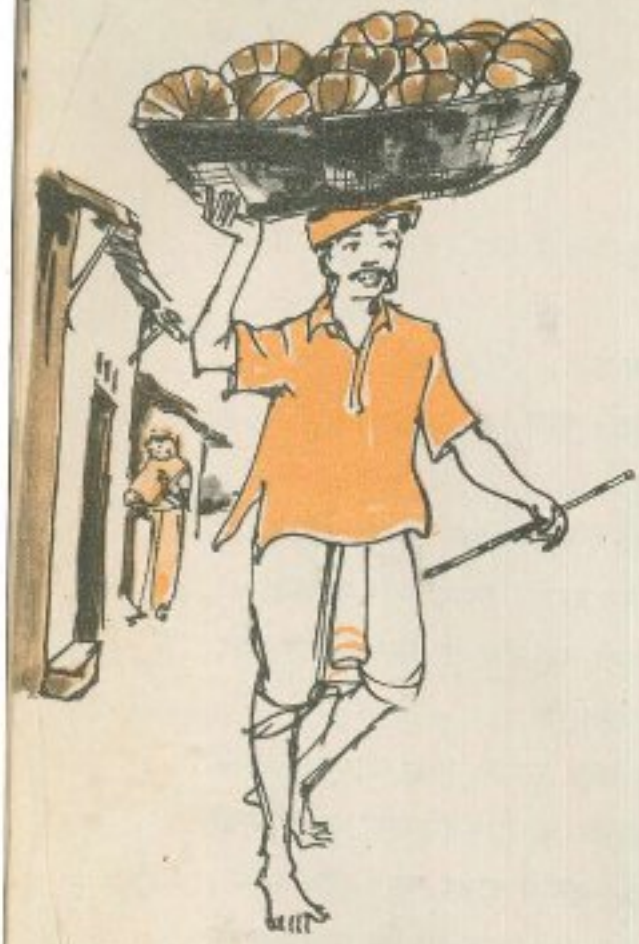

रानी का कर

एक गाँव में बुद्धू नाम का आदमी अपनी पत्नी और पाँच बच्चों सहित रहता था। उसके पास थोड़ी सी ज़मीन थी—जिसकी उपज उसके परिवार के लिए काफी नहीं होती थी। उसे खाने की चीज़ें खरीदनी पड़ती थी और उसके लिये पैसा चाहिए था। इसलिए उसे काम करना पड़ता था।

एक बार बहुत दिनों तक उसे कोई काम न मिला। बुद्धू को चिन्ता होने लगी कि कहीं उसके बाल-बच्चे भूखों ही न मर जायें। उसने अपने मित्रों और रिश्तेदारों से उधार लेने की चेष्टा की लेकिन उनके पास भी उधार देने के लिए पैसे न थे।

एक सुबह बुद्धू की पत्नी मुस्कराती हुई उसके पास आई।

"पेठे बाज़ार के लिए तैयार हैं," वह बोली—"पन्द्रह हैं। ज़रा सोचो। उनको बेचने के बाद हमारे पास काफी पैसे हो जायेंगे।"

"बहुत अच्छा," बुद्धू ने कहा।

दूसरे दिन सुबह होते ही बुद्धू बाज़ार की ओर चल पड़ा। एक बड़े टोकरे में पन्द्रह पेठे उसने सिर पर उठा रखे थे। बाज़ार वहाँ से काफी दूर था

और बुद्धू जब वहाँ पहुँचा तो बहुत थक चुका था। एक अच्छा सा स्थान देख कर उसने टोकरा उतार कर सामने रखा और बैठ कर ग्राहकों की प्रतीक्षा करने लगा।

इतने में एक हृष्ट-पुष्ट आदमी उसके पास आया। उसके साथ तीन और आदमी थे जिनके चेहरे से ही दुष्टता टपकती थी।

"एक पेठा मुझे दो," वह आदमी बोला।

बुद्धू एक क्या सारे पेठे उसे बेचने को तैयार था।

"आप इसका मुझे क्या दाम दोगे?" बुद्धू ने पूछा।

"क्या दूँगा?" वह आदमी चिल्लाया—"मैं तुम्हें एक कौड़ी भी नहीं दूँगा। एक पेठा तो तुम्हें मुझे देना ही है क्योंकि यह राजा का कर है।"

बुद्धू ने उस आदमी और उसके साथियों की ओर देखा। वे सब झगड़े

के लिए तैयार लगते थे। बुद्धू झगड़ा नहीं करना चाहता था। उसने उन्हें एक पेठा देकर विदा किया। उनके जाने के बाद बुद्धू ने चैन की साँस ली।

थोड़ी देर पश्चात् एक दूसरा कर संग्रह-कर्ता वहाँ आ गया। कुछ दुष्ट लोग उसके साथ भी थे।

"मुझे एक पेठा दो। यह सरकारी कर है," वह चिल्लाया।

बुद्धू ने उस आदमी और उसके साथियों को देखा। उसने सोचा कि कर देने से इनकार करना खतरनाक होगा। उसने उन्हें एक पेठा दे दिया और वे सब चले गये।

इतने में एक तीसरा कर लेने वाला आ गया। बुद्धू को बड़ा गुस्सा आ रहा था, लेकिन उसमें इनकार करने की भी हिम्मत न थी। वह इन सब बदमाशों से कैसे लड़ सकता था? उसने उन्हें भी एक पेठा दे दिया।

"चलो," जब आदमी चले गये तो बुद्धू बुड़बुड़ाया—"अब भी मेरे पास बारह पेठे बेचने के लिए हैं।"

लेकिन ऐसा कब होना था।

एक के बाद एक कर संग्रहकर्ता आते गये और प्रत्येक के साथ आया आवारा लोगों का एक दल।

एक एक करके बुद्धू ने सारे पेठे कर संग्रहकर्ताओं को दे दिये।

जब पन्द्रहवाँ संग्रहकर्ता चला गया तो बुद्धू के पास एक भी पेठा न बचा।

उसकी टोकरी खाली थी।

बेचारा बुद्धू क्या करता?

अब वह घर लौटने के अलावा और कर भी क्या सकता था।

बुद्धू ने धीरे धीरे दुखित मन से टोकरी उठाई और घर चलने को तैयार हुआ।

लेकिन एकाएक उसके सामने खड़ा था सोलहवाँ कर संग्रहकर्त्ता।

"जल्दी से कर दो," कर संग्रहकर्त्ता बोला।

"मैं कैसे दे सकता हूँ?" बुद्धू ने पूछा—"अब तो मेरे पास कोई पेठा बाकी नहीं।"

कर लेनेवाले को और उसके साथियों को बड़ा गुस्सा आया।

"तब तुम हमारे साथ बाजार के सुपारटेंडेंट के पास चलो।" वे बोले।

चुपचाप बुद्धू उनके साथ हो लिया और वहाँ पहुँच कर अपनी दुखभरी कहानी सुपरिटेंण्डेंट को सुनाई।

लेकिन वह बोला कि कर तो उसे देना ही पड़ेगा। यदि उसके पास पेठा या पैसे नहीं हैं तो वह उन्हें कर के रूप में टोकरी तथा पगड़ी ही दे दे।

बुद्धू बेचारा अपने पेठे, टोकरी तथा पगड़ी खो कर घर पहुँचा।

पत्नी तथा उसके बच्चे बड़ी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि बाजार से वह उन सबके लिए क्या लेकर आयेगा। उसने सारी आप बीती उनको सुनाई।

बुद्धू बड़ा दुखी सा वहाँ बैठा था। उसकी पत्नी भी बड़ी दुखी थी। वह कुछ देर सोच कर बोली—"मेरी समझ में आया कि क्या करना चाहिए।"

kissekahani.com

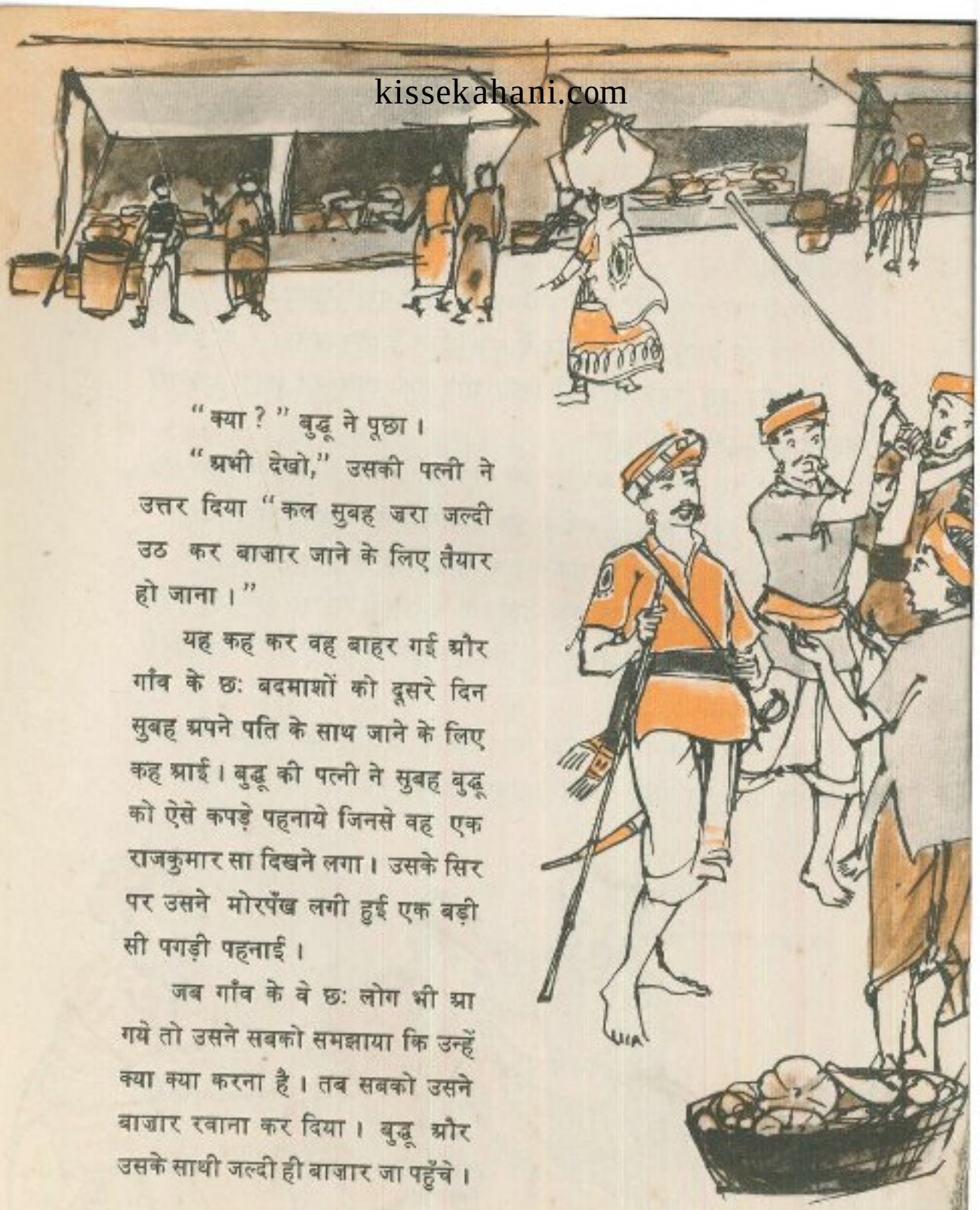

"क्या ?" बुद्धू ने पूछा।

"अभी देखो," उसकी पत्नी ने उत्तर दिया "कल सुबह जरा जल्दी उठ कर बाजार जाने के लिए तैयार हो जाना।"

यह कह कर वह बाहर गई और गाँव के छः बदमाशों को दूसरे दिन सुबह अपने पति के साथ जाने के लिए कह आई। बुद्धू की पत्नी ने सुबह बुद्धू को ऐसे कपड़े पहनाये जिनसे वह एक राजकुमार सा दिखने लगा। उसके सिर पर उसने मोरपँख लगी हुई एक बड़ी सी पगड़ी पहनाई।

जब गाँव के वे छः लोग भी आ गये तो उसने सबको समझाया कि उन्हें क्या क्या करना है। तब सबको उसने बाजार रवाना कर दिया। बुद्धू और उसके साथी जल्दी ही बाजार जा पहुँचे।

kissekahani.com

राजा उनसे अच्छी तरह मिला और उनकी बात बड़े ध्यान से सुनी। उसने तब बुद्धू को बुलाया।

"तुमने रानी के नाम से कर इकट्ठा करने का साहस कैसे किया?" राजा ने बुद्धू से पूछा—"रानी कहाँ से आयेगी जब अभी तक मेरा विवाह भी नहीं हुआ।"

"क्षमा कीजिए, महाराज," बुद्धू ने उत्तर दिया—"मुझे ऐसा करने के लिए मेरी पत्नी ने कहा था। उसका कहना था कि केवल इसी तरीके से हम भूखों मरने से बच सकते हैं।"

बुद्धू ने तब अपने पन्द्रह पेठों की कहानी सुनाई। राजा ने कुछ देर सोच-कर ऐलान करवा दिया कि सब कर समाप्त किए जाते हैं सिवाय एक कर के जो सरकार के लिए होगा। बुद्धू को उसने कर-संग्रहकर्त्ता नियुक्त कर दिया।

"लेकिन," वह बोला—"तुम इस कर के धन में से अपने लिए कुछ भी नहीं ले सकते। सारा एकत्रित धन राजा के कोष में जमा कराना होगा। तुम्हें इस काम के लिए हर महीने एक अच्छा वेतन दिया जायेगा।"

उस दिन से बुद्धू अपने बच्चों और पत्नी के साथ आनन्दपूर्वक रहने लगा।

बड़े साहस से बुद्धू ने पहले दुकानदार के पास जाकर रानी के नाम पर कर माँगा। इस दुकानदार को भी पहले सोलह कर संग्रहकर्त्ताओं ने तंग किया था। वह गुस्से से चिल्ला उठा।

"यह कौन सा नया कर है? मैं यह कर नहीं दे सकता।"

बुद्धू के मित्रों ने लाठियाँ उठा लीं।

"गुस्ताख आदमी, तुम नहीं जानते," बुद्धू बोला—"कि मैं रानी का चचेरा भाई हूँ? जल्दी से कर दे दो, नहीं तो मेरे मित्र तुम्हें समझ लेंगे।"

दुकानदार बेचारा डर गया। उसने जल्दी से कर दे दिया। बुद्धू अब अगली दुकान पर गया। वहाँ भी उसने अपना पार्ट बड़ी खूबी से निभाया और कर इकट्ठा किया। यदि कोई आपत्ति करता तो वह कहता कि वह रानी का भाई है। बुद्धू ने जब सब दुकानदारों से कर ले लिया तो घर लौटा। जितना पैसा मिला था उसे बुद्धू और उसके साथियों ने बाँट लिया।

बुद्धू अब प्रति दिन कर इकट्ठा करने लगा और उसकी गरीबी दूर हो गई। लेकिन सब दुकानदारों का बुरा हाल था। वे बहुत दुखी और चिन्तित थे। बहुत सारे दुकानदार इकट्ठे हुए और इस बात पर विचार विमर्श किया कि करों से छुट्टी पाने के लिए क्या किया जाये। अन्त में उन्होंने अपनी शिकायत लेकर राजा के पास जाने का निश्चय किया।

नमक की मिठास

एक समय की बात है एक राजा था। इस राजा को अपने पर बड़ा गर्व था। वह सदा अपने आकर्षक व्यक्तित्व, अपनी बुद्धि, अपनी सफलता तथा एक बड़ा शासक होने की बातें करता। वह चाहता था कि उसके आसपास के लोग उसकी बातों पर विश्वास करें और उसकी तारीफ के पुल बाँधते रहें। उसे वही लोग अधिक पसन्द थे जो उसकी प्रशंसा करते और वह सदा अपने मुँह लगे लोगों की संगत में ही दिखाई देता।

राजा के तीन लड़कियाँ थीं। एक दिन उसने अपने प्रति उन तीनों के प्रेम की परीक्षा लेनी चाही। उसने उन्हें अपने पास बुलाया।

"मेरी प्यारी बच्चियो," वह बोला--"लोग कहते हैं कि मैं बहुत बड़ा राजा हूँ। वे मुझे प्यार भी करते हैं और इतना सम्मान भी कि मेरे लिए अपनी जान भी देने को तैयार हैं। वे हर समय मेरी प्रशंसा के गीत गाते हैं। लेकिन मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरी अपनी लड़कियाँ मेरे बारे में क्या राय रखती हैं। अब तुम मुझे बताओ कि तुम मुझे कितना और किस तरह का प्यार करती हो?"

पहले वह अपनी सबसे बड़ी लड़की की ओर मुड़ा--उसका उत्तर जानने के लिए।

"पिता जी, मैं आपको बहुत प्यार करती हूँ," वह बोली--"मेरा प्यार आकाश की तरह अनन्त और सोने की तरह शुद्ध है।"

यह सुन कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। तब उसने अपनी दूसरी लड़की से पूछा कि वह क्या कहती है।

"पिता जी, मैं आपको बहुत प्यार करती हूँ," दूसरी लड़की ने उत्तर

दिया—"आपके लिए मेरा प्यार समुद्र की तरह असीम है और जवाहरातों की तरह मूल्यवान ।"

राजा प्रसन्नता से हँस पड़ा । तब उसने अपनी सबसे छोटी लड़की की की ओर देखा ।

"तुम क्या कहती हो ?" उसने पूछा—"तुम मुझे कितना प्यार करती हो ?"

तीसरी लड़की लज्जालु थी । वह अपने पिता के प्रश्न का उत्तर न दे सकी । राजा उसे बार-बार पूछने लगा —कि वह अपनी बहिनों से भी अधिक अच्छा कुछ कहे ।

"पूज्य पिता जी," आखिर में छोटी लड़की ने उत्तर दिया—"मेरा प्यार ऐसा ही है जैसा कि एक बेटी का अपने पिता के लिए होता है ।"

"लेकिन फिर भी तुम मुझे कितना प्यार करती हो ?" राजा ने फिर पूछा —"तुम्हारा प्यार किस तरह का है ?" तीसरी लड़की सोचने लगी और फिर बोली—"पिता जी, मैं इतना ही

kissekahani.com

कह सकती हूँ कि मैं आप को उतना ही प्यार करती हूँ जितना कि आप और मैं नमक को करते हैं।"

"क्या ?" राजा कड़क कर बोला—"मुझे तुम केवल साधारण नमक के बराबर प्यार करती हो ?"

"हाँ, पिता जी," उसने उत्तर दिया।

"तुमने यह कहने की हिम्मत कैसे की कि तुम मुझे साधारण नमक के बराबर प्यार करती हो ?" राजा गरजा —"क्या मैं इतना सस्ता हूँ। तुम तत्काल अपने शब्द वापिस लो नहीं तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा।"

"लेकिन पिता जी," राजकुमारी बोली—"इससे और अच्छा तरीका मेरे पास नहीं है, जिससे मैं अपना प्यार प्रगट कर सकूँ।"

राजा क्रोध से लाल-पीला हो गया। "मुझे इस तरह अपमानित करने का फल तुम भुगतोगी," वह बोला। उस दिन से राजा ने अपनी छोटी लड़की से सब तरह का सम्बन्ध तोड़ दिया। वह उसकी ओर देखता तक नहीं था।

समय गुजरता गया। राजा ने अपनी दोनों बड़ी लड़कियों का विवाह दो राजाओं के साथ कर दिया और उन्हें ढेर सारा दहेज भी दिया।

तीसरी राजकुमारी अब अकेली रह गई। रानी ने एक दिन छोटी लड़की का विवाह भी तय करने के लिए राजा से कहा।

"उस बेवकूफ लड़की का विवाह ?" राजा बोला "जरा रुको, और देखो उसका विवाह मैं किस तरह से करता हूँ।"

राजा ने बाहर सड़क पर देखा। वहाँ पर उसे एक भिखारी दिखाई दिया। राजा ने उसे भीतर बुलाया।

"तुम कौन हो ?" राजा ने पूछा—"सड़क पर तुम क्या कर रहे हो ?"

"मैं खाने के लिए भिक्षा माँग रहा हूँ," भिखारी ने उत्तर दिया—"कई

kissekahani.com

दिनों से मुझे कोई काम नहीं मिला है।"

"तुम भिखारी हो। यह बड़ा अच्छा है," राजा बोला।

"मैं तुम्हारा विवाह एक राजकुमारी से कर दूँगा। तब तुम दोनों इकट्ठे भीख माँग सकते हो।"

राजा ने अपनी छोटी लड़की का विवाह उस भिखारी से कर के उसे विदा कर दिया।

राजकुमारी ने अपना दण्ड बिना एक शब्द कहे हुए स्वीकार कर लिया। अपनी दशा पर उसे ज़रा भी अफसोस न था। वह जानती थी कि अब वह राजकुमारी नहीं रही। न उसके पास अब धन था और न हैसियत। जो कुछ था वह था पति के रूप में एक भिखारी।

लेकिन वह एक बहादुर लड़की थी और किसी भी स्थिति या कठिनाई का सामना करने के लिए तैयार थी।

सब से पहले वह अपने पति के बारे में जानना चाहती थी कि वह कौन था।

पति ने बताया कि वास्तव में वह भिखारी नहीं था। वह इस शहर में

नया था और काम खोज रहा था। जब उसे कोई काम नहीं मिला तो लाचार होकर उसे एक दिन भोजन के लिए भिक्षा माँगनी पड़ी। उसी समय राजा ने उसे पकड़वा लिया।

नवयुवक बड़ा महत्त्वाकाँक्षी था। एक वीर और चतुर लड़की को अब पत्नी के रूप में पाकर अपनी स्थिति को सुधारने के लिए वह किसी भी कठिनाई से जूझने को तैयार था।

नवयुवक और उसकी पत्नी शहर से बहुत दूर पर छोटी सी झोपड़ी में रहने लगे। पत्नी ने कुछ गहने पहने हुए थे। उसने अपने सब गहने बेच दिए और उन पैसों से एक नया जीवन आरम्भ किया।

थोड़ी सी ज़मीन उन्होंने किराये पर ली और उस पर खेती करने लगे। फसल अच्छी हुई। अब उन्होंने और ज़मीन ले ली। वहाँ पर भी भरपूर फसल हुई। इस तरह खूब परिश्रम से काम करने से धीरे-धीरे उन्होंने अपनी खेती बहुत बढ़ा ली।

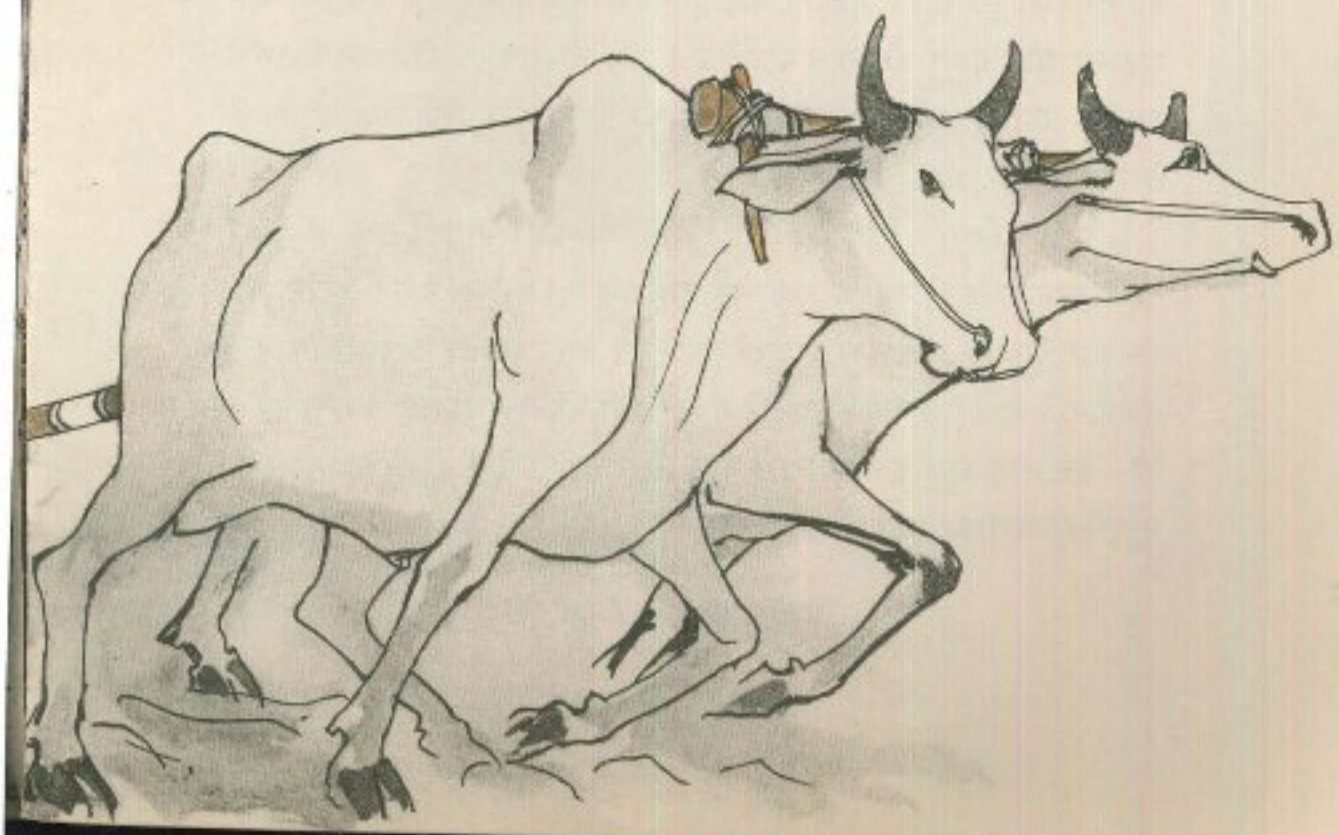

कुछ ही वर्षों में उन्होंने इतना पैसा जमा कर लिया कि खेती की सारी ज़मीन खरीद ली। धीरे-धीरे वे धनी और सम्पन्न हो गए। कुछ समय बाद उन्होंने अपना मकान भी बनवा लिया। लेकिन अब भी वे पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं थे। उन्होंने अपना परिश्रम साहस और दृढ़ता से जारी रखा। कुछ वर्षों में उनके पास बहुत सी ज़मीन और बड़े-बड़े भवन हो गये।

अब उन्होंने अपने लिए एक बड़ा सा महल बनवाया और उसमें राजा की तरह बड़े ठाट और आराम से रहने लगे।

इस समय तक उनकी सामाजिक स्थिति बड़ी अच्छी हो गई थी। वे अपने घर पर शहर के प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण लोगों को निमन्त्रित करते थे।

एक दिन उन्होंने राजकुमारी के पिता—राजा—को भी अपने यहाँ खाने पर निमन्त्रित किया। राजा ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया, लेकिन वह इस बात से अनजान था कि वह अपनी लड़की के यहाँ ही खाने पर जा रहा है।

भोज बड़ा शानदार था। राजा और बाकी सब अतिथि इस आयोजन से बड़े प्रभावित हुए थे।। गृहपति और गृहणी अपने अतिथियों की देखभाल बड़ी शिष्टता और सुन्दर ढंग से कर रहे थे। जैसे ही राजकुमारी अपने पिता के नज़दीक पहुँची उसने अपना घूंघट नीचा कर लिया और फिर उन्हें भोजन के लिए बैठने का आग्रह किया।

राजा भोजन के लिए बैठ गया। सोने के कटोरों में तरह-तरह की चीजें उसके सामने रख दी गयीं। राजा को भूख लग रही थी, उसने एक कटोरे में से एक ग्रास खाया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, जब उसने अनुभव किया कि खाने में नमक नहीं था। उसने दूसरे कटोरे में से सब्जी चखी—वह भी बिना नमक के थी। इस तरह उसने एक कटोरी के बाद दूसरी कटोरी में से भोजन चखा, लेकिन नमक सब में गायब था।

kissekahani.com

राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने अपने चारों ओर निराशा से देखा, लेकिन बाकी अतिथि तो मजे से भोजन का आनन्द ले रहे थे। घूंघट निकाले गृहणी फिर राजा के नजदीक आई।

"महाराज," उसने बड़े मीठे स्वर में पूछा—"क्या आपको हमारे यहाँ का भोजन अच्छा नहीं लगा ?"

"तुम्हारा खाना अच्छा लगे ?" राजा गरजा—"ऐसा खाना मेरे सामने परसने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ? यह खाना बिना नमक के पकाया गया है ! तुमने मुझे ऐसा खाना परोस कर मेरा अपमान किया है।"

गृहणी ने तब अपना घूंघट उठाया। "तो आपको नमक अच्छा लगता है।" वह बोली—"आपको बहुत पसन्द है। निःसन्देह आपके लिए वह सोने और जवाहरातों से अधिक मूल्यवान है।"

राजा ने गृहणी की ओर देखा। वह आश्चर्य से देख रहा था कि यह कौन है ? अचानक उसने पहचाना। अरे, यह तो उसकी तीसरी लड़की उसके सामने खड़ी थी। वह कुछ न कह सका। पहली बार उसने अनुभव किया कि आदमी के लिए सस्ता और साधारण नमक सोने और जवाहरातों से अधिक लाभ-दायक है।

"मेरी बच्ची," राजा ने राजकुमारी को प्यार करते हुए कहा—"मेरी मूर्खता के लिए क्षमा कर दो।"

छोटी लड़की से जैसा व्यवहार राजा ने किया था अब उसके लिए वह लज्जित था। अब वह अपनी गलती को किसी तरह सुधारना चाहता था। उसने छोटी राजकुमारी और उसके पति को अपना सारा राज्य दे दिया और फिर वे सब आनन्दपूर्वक रहने लगे।

kissekahani.com

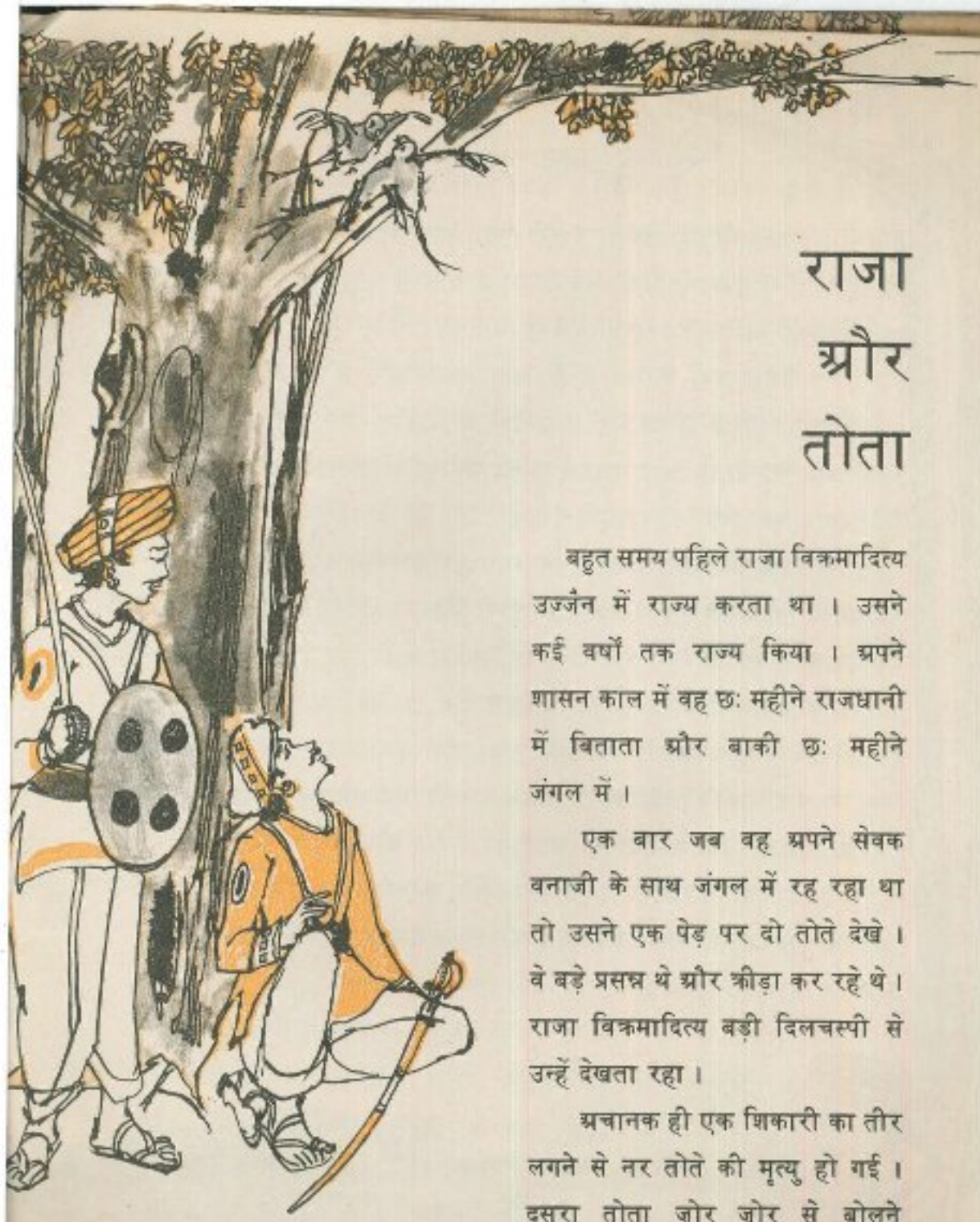

राजा और तोता

बहुत समय पहिले राजा विक्रमादित्य उज्जैन में राज्य करता था । उसने कई वर्षों तक राज्य किया । अपने शासन काल में वह छः महीने राजधानी में बिताता और बाकी छः महीने जंगल में ।

एक बार जब वह अपने सेवक वनाजी के साथ जंगल में रह रहा था तो उसने एक पेड़ पर दो तोते देखे । वे बड़े प्रसन्न थे और क्रीड़ा कर रहे थे । राजा विक्रमादित्य बड़ी दिलचस्पी से उन्हें देखता रहा ।

अचानक ही एक शिकारी का तीर लगने से नर तोते की मृत्यु हो गई । दूसरा तोता जोर जोर से बोलने लगा ।

राजा को यह सब बहुत बुरा लगा। वह तोतों के लिए बहुत दुखित था।

"मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ यदि मैं फिर से उन्हें उनकी प्रसन्नता दे सकूँ," राजा ने बनाजी से कहा।

"महाराज, वास्तव में ही आप बड़े सहृदय हैं जो पक्षियों के दुख पर भी इतने दुखित हो गये हैं।" बनाजी ने उत्तर दिया—"यदि आप चाहें तो थोड़े समय के लिए आप पेड़ पर बैठे दुखित पक्षी को थोड़ा सा आनन्द दे सकते हैं।"

"वह कैसे?" राजा ने पूछा।

"आपके पास शक्ति है कि आप अपने शरीर को छोड़ कर किसी दूसरे शरीर में प्रवेश कर सकते हैं," बनाजी बोला—"इस मरे हुए तोते के शरीर में प्रवेश कर के आप थोड़ी देर के लिए उसे जीवित कर दीजिए। फिर बाद में आप अपने शरीर में लौट आइयेगा।"

"बड़ा अच्छा विचार है," राजा बोले—"इससे मुझे यह सन्तोष होगा कि चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही—उसकी पत्नी को फिर से प्रसन्न कर सका। अच्छा जब तक मैं लौट कर आऊँ मेरे शरीर की देखभाल करना।"

राजा विक्रमादित्य अपना शरीर छोड़ कर तोते के शरीर में प्रवेश कर गया। अब तोता उड़ कर अपने साथी से जा मिला।

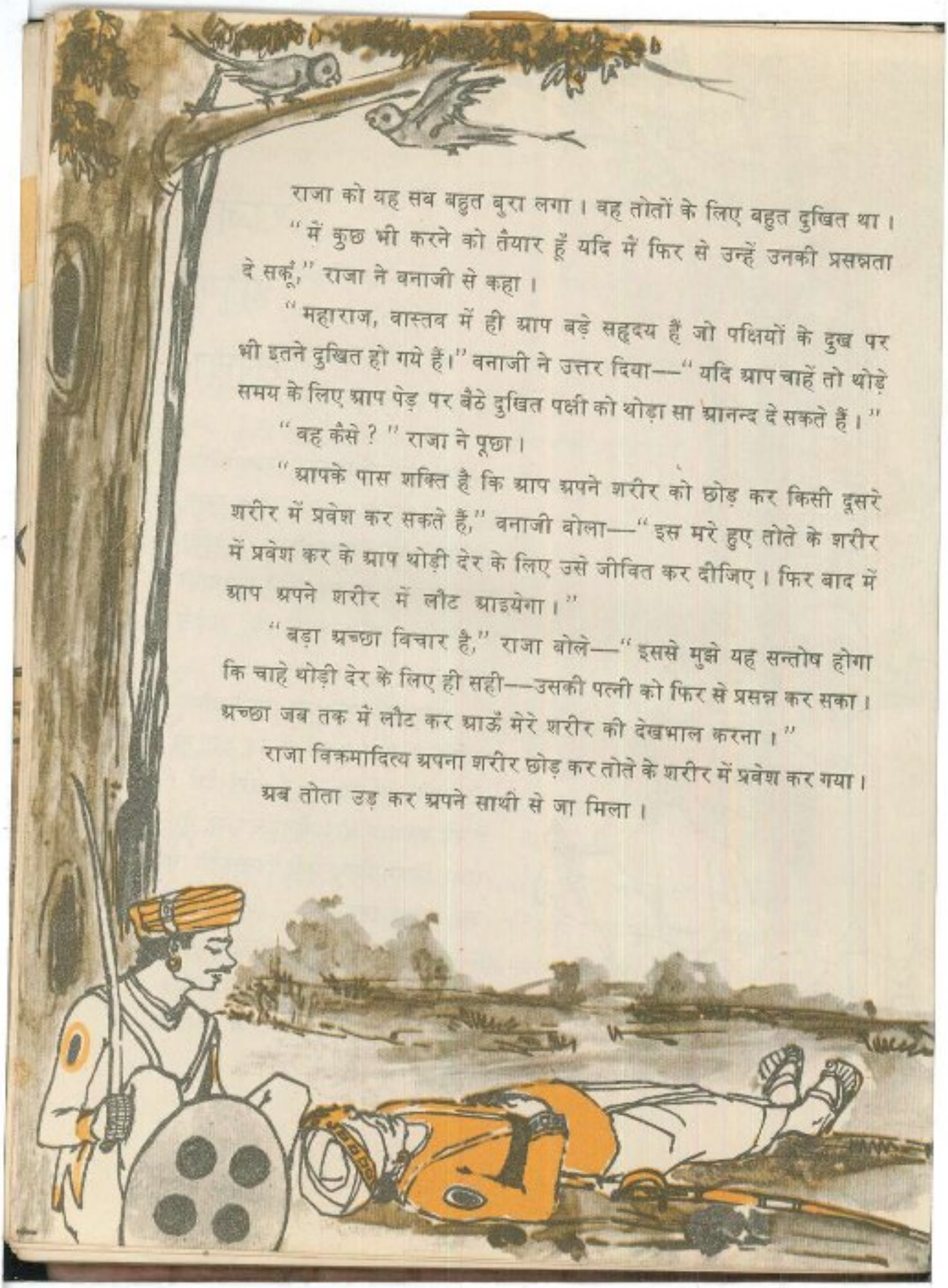

kissekahani.com

वनाजी के पास भी यही शक्ति थी। वह भी अपना शरीर छोड़कर दूसरे के शरीर में प्रवेश कर सकता था। वह बैठा हुआ राजा विक्रमादित्य के निर्जीव शरीर की ओर देख रहा था। उसे एक विचार आया। चलो मैं भी थोड़ी देर के लिए राजा के शरीर में प्रवेश कर के देखूं कि राजा बन कर आदमी कैसा अनुभव करता है?

वनाजी ने अपना शरीर छोड़ा और राजा के शरीर में प्रवेश कर गया। उसे बड़े आनन्द का अनुभव हुआ कि वह बहुत बड़ा राजा है। फिर उसे विचार आया कि यदि वह राजाओं का सा बर्ताव कर सके तो इसी शरीर में रह सकता है।

वनाजी बड़ा चतुर आदमी था। वह अच्छी तरह से जानता था कि राजा अपने रोज़ के कार्य कैसे करता है। महत्त्वाकांक्षा ने उस पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। उसने राजा विक्रमादित्य के शरीर में ही रहने का निश्चय कर लिया। उसने सोचा कि अपने शरीर को नष्ट कर देना ही ठीक रहेगा। उसने लकड़ी इकट्ठी कर के खूब आग जलाई और अपना शरीर उसमें फेंक दिया। फिर वह राजा की राजधानी उज्जैन की ओर चल दिया।

राजा के प्रधानमन्त्री भट्टी को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने राजा को नियत समय से पहले लौटते देखा। उसने इसका कारण जानना चाहा।

बनावटी राजा ने अपना पार्ट बड़ी खूबी से निभाया लेकिन भट्टी भी कम चतुर न था। भट्टी को लगा कि कई छोटी छोटी चीजें जो वह राजा में देखा करता था अब दिखाई नहीं दे रही थीं।

ज्यों ज्यों वह राजा को अधिक ध्यान से देखता उतना ही उसका सन्देह पक्का होता जाता कि दाल में कुछ काला अवश्य है।

भट्टी ने अपना सन्देह रानी पर भी प्रकट किया। उसने पाखण्डी को अच्छी देखरेख में रखा और उसे महल में किसी प्रकार की स्वतन्त्रता न लेने दी।

kissekahani.com